# Pt. Ravishankar Shukla University
# Raipur, Chhattisgarh

## Golden Jubilee Celebration

**May 1, 2013 to May 1, 2014**

**Extra-Curricular Activities during Golden Jubilee Year**

# A Report


**::Prepared By::**

**Prof. Mitashree Mitra**

**Chairperson, Extra Curricular Activities Committee**

**School of Studies in Anthropology**

**Pt. Ravishankar Shukla University**

**Raipur (C.G.)**

# Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, Chhattisgarh

**May 1, 2013 to May 1, 2014**

## Extra-Curricular Activities during Golden Jubilee Year

## Content

| S.No | Date | Title of Program/Activity |
|---|---|---|
| 1 | 1.5.2013 | ➢ 50th Foundation Day Celebration and Beginning of Golden Jubilee Celebration of Pt. Ravishankar Shukla University<br>**Speaker: Justice C.S. Dharmadhikari**<br>Retired Justice, High Court on<br>**"Insan Kho Gaya Bhagwan So Gaya"**<br>➢ **Release of Golden Jubilee Logo** |
| 2 | 7.8.2013 | Motivational Lecture and interaction with students by<br>**Smt. Santosh Yadav**, Padmashree (Twice Everest Summiteere and Leader)<br>Director, Everest Foundation, New Delhi |
| 3 | 15.8.2013 | ➢ **Independence Day Celebration**<br>➢ **Golden Jubilee Plantation in University Campus**<br>➢ **Patriotic songs by Band Salvation Regained**, Bhilai<br>Lead vocalist: Amrita Talukdar and Her Team |
| 4 | 11.9.2013 to 16.9.2013 | **Leadership, Team Building & Adventure Course for Youth**<br>**Everest Foundation, New Delhi**<br>A Team of 100 students of various departments of UTD along with four Escorting Teachers |
| 5 | 11.9.2013 | **Golden Jubilee Lecture by Bharat Ratna Dr. A. P. J. Abdul Kalam**<br>Former President of India on<br>**"Science is reciprocating"** |
| 6 | 19.10.2013 | **SPIC MACAY**<br>(Society for Promotion of Indian Classical Music and Culture Amongst Youth)<br>National School Intensive 2013 Program<br>Shahnai Vadan by Ustad Ali Ahmed Hussain, Raja Miyan and Group |
| 7 | 03.12.2013 | **Golden Jubilee Lecture by Padma Vibhusan Dr. Anil Kakodkar**<br>Department of Atomic Energy, Homi Bhabha Chair at BARC on<br>**"Emerging Energy : Challenges and Opportunities"** |
| 8 | 04.12.2014 | Cultural Programme **"Chhattisgarh Darshan"**<br>By Children of Ramakrishna Mission Ashram, Narainpur |
| 9 | 14.12.2013 | **Golden Jubilee Lecture by Justice Patnaik**<br>Judge, Supreme Court on<br>**Division and Decentralization of Powers under the Indian Constitution** |
| 10 | 27.12.2013 | **Golden Jubilee Lecture by Professor Partha P. Majumder**<br>Director, National Institute of Biomedical Genomics, Kalyani on<br>**"In search of the Drivers: Excavating Cancer Genomes"** |
| 11 | 13.1.2014 | **Release of KULGEET of Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur by Hon'ble Chief Minister Dr. Raman Singh** |

| | | |
|---|---|---|
| 12 | 15.1.2014 | Golden Jubilee Lecture by **His Holi Dalai Lama** on **"Wisdom and Compassion"** |
| 13 | 27.1.2014 | Classical Devotional Dance – **Odisee** by Smt. Purnashree Raut & Shri Lucky Mohanty and group |
| 14 | | Establishment of Museum of Intangible Heritage in association with INTACH is under progress |
| 15 | 29.3.2014 | Lecture and Prize Distribution to the students of Leadership, Team Building & Adventure Course for Youth by **Smt. Santosh Yadav**, Padmashree (Twice Everest Summiteere and Leader) Director, Everest Foundation, New Delhi |
| 16 | 01.5.2014 | ➢ Golden Jubilee Closing Ceremony and Foundation Day Celebration<br>➢ Cultural Program sponsored by Department of Culture<br>➢ Cultural programme depicting cultural heritage of Chhattisgarh |
| 17 | 27.8.2014 | ➢ Golden Jubilee Lecture "**Learning From Life**" by Padma Bhushan Shri B. Muthuraman(Vice Chairman Tata steel) |
| 18 | | ➢ Documentary Film on Pt. Ravishankar Shukla University titled 'Supatha' |

**Extra Curricular Activities Committee**
**(Order No.1462/Gen.Admn/Golden Jubilee-53/2013 Raipur dated 9.4.2013)**

**Chairperson:** Professor Mitashree Mitra

**Members:**

Professor Adity Poddar

Professor Namita Brahme

Professor Priyamvada Shrivastava

Professor Bhagwant Singh

Professor Rajeev Choudhury

Professor Moyna Chakravarty

Professor Shail Sharma

Professor D. P. Bhisen

Professor Kavita Thakur

Dr. B.L. Sonekar

Dr. Hemlata Borkar

Dr. N.K. Mishra

# स्वर्ण जयंती व्याख्यान

## " इंसान खो गया भगवान सो गया "

**01.05.2013**

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर में दिनाँक 01. 05.2013 को विश्वविद्यालय का 50 वाँ स्थापना दिवस एवं स्वर्ण जयंती शुभारंभ समारोह मनाया गया। समारोह में मुख्य अतिथि जस्टिस सी.आर. धर्माधिकारी, पूर्व मुख्य न्यायाधीश महाराष्ट्र हाईकोर्ट थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं माननीय राज्यपाल श्री शेखर दत्त एवं विशिष्ट अतिथियों माननीय रामविचार नेताम, उच्च शिक्षा मंत्री छत्तीसगढ़ शासन एवं माननीय विद्याचरण शुक्ल, पूर्व सासंद ने माँ सरस्वती की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर विश्वविद्यालय की स्वर्ण जयंती का शुभारंभ किया।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण देते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस.के. पाण्डेय ने समस्त अतिथिगणों, विश्वविद्यालय के शिक्षक गणों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं का

स्वागत करते हुए अपने उद्‌बोधन में कहा कि विश्वविद्यालय के इतिहास में एक और नया अध्याय जुड़ने जा रहा है, यह अध्याय है **स्वर्ण जयंती वर्ष** का, जिसका प्रारंभ आज से होने जा रहा है। मेरे लिए यह विशेषकर बड़ा सौभाग्य पूर्ण दिन है। मेरा पहला कार्यकाल इस विश्वविद्यालय में मैंने आप सबके आर्शीवाद और स्नेह से पूरा किया। दूसरे कार्यकाल में मेरा यह सौभाग्य है कि हमारा विश्वविद्यालय एक नये सोपान की ओर आगे बढ़ रहा है, यह सोपान है स्वर्ण जयंती वर्ष का, जिसमें हमें यह देखना है कि विश्वविद्यालय ने विगत 49 वर्षों में क्या प्रगति की एवं इसके विकास में क्या कमियाँ रह गई। हम सभी यह जानते हैं कि हमारे विश्वविद्यालय का इस प्रदेश में अग्रणी स्थान है, लेकिन राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हम अपने विश्वविद्यालय का एक विशेष स्थान बनाने में बहुत सफल नहीं हो पाए हैं।

आगे उन्होंने कहा कि 'हम सबकों एकजुट होकर यह प्रयास करना है कि हम उन कमियों को दूर करें जो इस विश्वविद्यालय को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने में बाधक सिद्ध हो रही है। इस स्वर्ण जयंती वर्ष में

हम संकल्प लें कि हम सब मिलकर विश्वविद्यालय के विकास के नए सोपानों का निर्माण करेंगें।' कार्यक्रम के मुख्य अथिति व प्रमुख वक्ता जस्टिस सी.आर. धर्माधिकारी, पूर्व मुख्य न्यायाधीश महाराष्ट्र हाईकोर्ट ने अपने उद्बोधन में विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक गणों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि 'जिस कार्य का प्रारंभ धर्माधिकारी के नाम से हो, वह अवश्य सफल होता है।' उन्होंने विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती की बधाई देते हुए विश्वविद्यालय के प्रगतिशील भविष्य की कामना की। उन्होंने अपना वक्तव्य धर्म के विषय पर देते हुए अपने द्वारका यात्रा वृतान्त के बारे में बताया कि वे जब द्वारकाधीश के दर्शन के लिए गुजरात गये हुये थे तो राज्य सरकार द्वारा उनके मंदिर दर्शन व पूजा–अर्चना हेतु विशेष प्रबंध किए गए थे। उन्होंने बताया कि वे जब मंदिर परिसर में पहुँचे तो मंदिर में आए सारे दर्शानार्थियों को मंदिर परिसर के बाहर ही रोक दिया गया और केवल उन्हें और उनकी पत्नि को ही मंदिर में प्रवेश दिया गया। पुरोहित से जब इसका कारण जानना चाहा तो पुरोहित ने कहा कि इसे वी.आई.पी. दर्शन कहते हैं, जो केवल वी.आई.पी. व्यक्तियों के लिए होता है। चूँकि आप एक वी.आई.पी. व्यक्ति हैं इसलिए आपके लिए ऐसा प्रबंध किया गया है ताकि आपको किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। उन्होंने कहा कि यह असमानता मंदिर में देख कर वे दंग रह गये। उन्होंने पुरोहित से कहा कि मंदिर या देवालय जो भगवानों के निवास स्थल माने जाते हैं, जब वहाँ लोंगों के मध्य भेदभाव किया जा रहा है तो अन्य स्थानों पर क्या अपेक्षा रख सकतें हैं ? मंदिर आने वाला हर एक व्यक्ति केवल एक भक्त होता है, उनमें वी.आई.पी. या सामान्य व्यक्ति का भेद नहीं होता और न ही ऐसा भेदभाव किया जाना उचित होगा। उन्होंने असमानता के संबंध में एक और उदाहरण देते हुए बताया कि आप लोंगों ने लेखक अनविल कि पुस्तक ''एनीमल फार्म'' के बारे में पढ़ा होगा। उस पुस्तक की विषय वस्तु का उल्लेख करते हुए कहा कि अनविल द्वारा रचित इस पुस्तक में एक मनुष्य और 200 से अधिक जानवरों की समझ के बारे बताया गया है। एक फार्म में 200 प्रकार के अलग–अलग जानवरों का एक साथ रहना और आपस में समानता का पालन करना इस पुस्तक का प्रमुख सार है। जस्टिस सी.एस. धर्माधिकारी ने इन सब उदाहरणों के माध्यम से वर्तमान युग में जाति, धर्म व लिंग के आधार पर हो रहे भेदभाव की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए असमानता तथा भेदभाव का पुरजोर विरोध किया और बताया कि हमारे संविधान में भी धारा 14 के अनुसार ''सभी मानव एक समान है'' का नियम है और जो इसका पालन नहीं करता है, उसके लिए

संविधान में दंड का प्रावधान संविधान निर्माताओं द्वारा किया गया है। जब तक हम मानव समाज आपस में एक–दूसरे के लिए अपने मन में समानता की भावना नहीं लायेंगें तब तक ऐसा कहना उचित नहीं होगा कि हमने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास के नए सोपानों का निर्माण किया है, और उन्होंने पुनः विश्वविद्यालय को उसके स्वर्ण जयंती वर्ष की शुभकामनाएँ देते हुए अपना वक्तव्य पूर्ण किया।

कार्यक्रम के आगे की कड़ी में माननीय रामविचार नेताम, उच्च शिक्षा मंत्री छत्तीसगढ़ शासन ने विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक गणों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं को विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती वर्ष की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि इसमें कोई शंका नहीं है कि पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर ने पूरे प्रदेश में अग्रणी स्थान प्राप्त किया है। इस विश्वविद्यालय के माध्यम से छत्तीसगढ़ प्रदेश के हर क्षेत्र के युवा वर्ग को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है। उन्होंने आगे कहा कि मैं कामना करता हूँ कि आगे भी पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय प्रदेश स्तर पर ही सीमित न रह कर राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी विकास के नए सोपानों को गढ़ें, ऐसा कहते हुए उन्होंने अपना वक्तव्य पूर्ण किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे छत्तीसगढ़ के राज्यपाल तथा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय श्री शेखर दत्त ने अपने उद्‌बोधन में सर्वप्रथम विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक गणों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं को विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती वर्ष की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि 'यह अत्यंत गर्व की बात है कि हमारे पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के 49 वर्ष पूर्ण हो गये हैं और विश्वविद्यालय अपने 50 वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है। इन 49 वर्षों में विश्वविद्यालय ने विकास के नए–नए सोपानों का निर्माण किया है, चाहे वह शिक्षा से संबंधित हो या अनुसंधान से संबंधित उपलब्धियाँ हो।' उन्होनें आगे कहा कि 'विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1964 में अविभाजित मध्यप्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री माननीय पं. रविशंकर शुक्ल के कर कमलों से हुआ है। उन्होंने विश्वविद्यालय का निर्माण एक महत्वपूर्ण उद्‌देश्य को लेकर किया था, वह उद्‌देश्य था छत्तीसगढ़ प्रदेश के युवा वर्ग को सहजता से उच्च शिक्षा अपने स्थानीय स्तर पर प्राप्त हो सके एवं उन्हें उच्च शिक्षा के लिए प्रदेश के बाहर न जाना पड़े। आज उनका यह उद्‌देश्य पूरा हो रहा है और यह

विश्वविद्यालय वर्तमान में पूरे प्रदेश में अग्रणी स्थान पर है।' उन्होंने देश के विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय नालंदा और तक्षशिला का उदाहरण देते हुए कहा कि ये विश्वविद्यालय ऐसे विश्वविद्यालय हैं जिन्होंने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेषताओं के द्वारा एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। इन विश्वविद्यालयों ने वर्तमान में ही नहीं बल्कि प्राचीन काल से पूरे विश्व में अपना एक विशेष स्थान बनाए रखा है। आगे उन्होंने कहा कि हमें भी आने वाले वर्षों में आपस में मिलकर ऐसा संयुक्त प्रयास करना होगा जिससे पं. रविशंकर

शुक्ल विश्वविद्यालय पूरे विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सके। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस.के. पाण्डेय ने मुख्य अतिथि एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किया।

कार्यक्रम के अंत में आभार प्रकट करते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री के.के. चन्द्राकर ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, अन्य विशिष्ट अथितियों  व विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक गणों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं को विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती वर्ष की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती वर्ष में विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न प्रकार के नए–नए कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम की श्रृंखला में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी, कार्यशाला, अतिरिक्त क्रियाकलाप व सांस्कृतिक कार्यक्रम भी शामिल है।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा भजन संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें पद्मश्री भारती बंधु द्वारा भक्तिमय भजनों की प्रस्तुति दी गई, जिसका आनंद सभी सुधीजनों ने उठाया।

## स्वर्ण जयंती प्रतीक चिन्ह विमोचन

**01.05.2013**

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर में दिनाँक 01.05.2013 को विश्वविद्यालय का 50 वाँ स्थापना दिवस एवं स्वर्ण जयंती शुभारंभ समारोह मनाया गया। समारोह में मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय शेखर दत्त, राज्यपाल छत्तीसगढ़ थे। जस्टिस सी.आर. धर्माधिकारी, श्री रामविचार नेताम उच्च शिक्षा मंत्री छत्तीसगढ़ शासन, पूर्व सासंद माननीय विद्याचरण शुक्ल, कुलपति प्रो. एस.के. पाण्डेय एवं कुलसचिव के. के. चन्द्राकर उपस्थित थे।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा विश्वविद्यालय के 50 वाँ स्थापना दिवस व स्वर्ण जयंती समारोह के प्रतीक चिन्ह का विमोचन किया गया जिसका निर्माण श्री मेहताब आलुवालिया, इंटरनेशनल मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट नई दिल्ली ने किया है। इस प्रतीक चिन्ह का भावार्थ है

**“It is time to unveil - to reveal - to spread out the wings of passion and fly towards further glory but still remembering the glorious 50 years of the past, wearing the royal maroon robe (the ribbon)”.**

## Golden Jubilee Celebration

## 07.08.2013

# Motivational Lecture by Padamshree Santosh Yadav

On the occasion of Golden Jubilee Year of Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, Chhattisgarh organized motivational lecture on 7th August 2013 at 1: 30 pm C.V. Raman Hall in the campus. The program was motivational and inspirational to all delegates and audience. The aim of this program was to boost up self-confidence, decision making power and enthusiasm new generations.

The convener of the function Prof. Mitashree Mitra paid gratitude to key speaker Padamshree Santosh Yadav to giving her precious time to the University faculty members and students & welcome Smt. Yadav with great applauds. Prof. Reeta Venugopal introduced the eminent personality Padamshree Santosh Yadav.

She delivered her lecture on "Awaj" that means "(voice)". The voice can turn a tempestuous person into calm person. The voice ought to be courteous, gracious, mannerly and polite. She told the importance of communication skill in our life. She speaks how a person can rule over the heart of peoples by using soft skill.

Apart from soft skill Padamshri Yadav emphasized on the "Awaj of heart" or appeal of inner-voice. It is very importance to become happy and successful, because if we perform any task with full of interest, zeal, enthusiasm and

ebullience we put our best that is the key component of success and this success fulfill life with joy, happiness, delight, pleasure.She said each person must be accountabily for his/her quality, choice, interest and most important wish of heart.

In her lecture, Smt. Yadav throw light on different dimensions like positive attitude, time management, loving one self, being broad minded, having big dreams, aplomb and goals and also working towards achievement of goals.

The program team member Prof. Swarnlata Saraf showed her gratitude toward Padamshree Santosh Yadav for her inspirational and motivational lecture.The session was followed by a healthy interactive session between students, faculty member and delegates. In the questionnaire session there were several question to Smt. Yadav on different aspects of life, life style, current problem faced by students, success tips etc.The students and the faculty were highly inspired by her lecture. Prof. Priyamvada Shrivastava anchored the programme & Prof. Aditi Poddar actively organized this occasion.

# स्वतंत्रता दिवस समारोह

## Independence Day Celebration

**15.08.2013**

स्वतंत्रता दिवस की 66 वीं वर्षगाँठ के पावन अवसर पर प्रातःकाल माननीय कुलपति प्रो. एस. के. पांडे ने विश्वविद्यालय के प्रेक्षागृह के प्रांगण में ध्वजारोहण दिया। इस ऐतिहासिक गौरवमय क्षण के गवाह वि.वि. परिवार के शिक्षक, छात्र, कर्मचारी, अधिकारी गण के अतिरिक्त परिसर में स्थित स्कूल के शिक्षक व छात्र–छात्राएँ भी थे। इस अवसर पर माननीय कुलपति महोदय ने सारगर्भित एवं प्रेरणा से ओतप्रोत ओजस्वी उद्‌बोधन दिया। तत्पश्चात् प्रेक्षागृह प्रांगण में एन. एस.एस. के सहयोग से वृक्षारोपण किया गया।

आजादी के पावन पर्व के साथ ही विश्वविद्यालय की स्थापना के स्वर्ण जयंती वर्ष में प्राणाधिक्य प्रिय मातृभूमि के उच्चत्तम बलिदान की प्रेरणा लेकर संगीत की आराधना में तीन हमारे विश्वविद्यालय की गौरव सुश्री अमृता तालुकदार के संगीत प्रेम एवं अभिरूचि ने अन्य साथियों के साथ मिलकर "SALVATION REGAINED BAND" अर्थात् ''मोक्ष की पुर्नप्राप्ति'' की स्थापना की। बहुत अल्प समय में इसने कई ऊँचाईयों को छुआ है। स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में SALVATION REGAINED BAND द्वारा देशभक्ति पूर्ण गीतों की स्वरांजली दी। टीम की प्रमुख गायिका थी सुश्री अमृता तालुकदार, प्रमुख गिटार वादक श्री विवेक सेमुअल दयाल, बेस गिटार वादक श्री आर. जयंत कुमाार, की–बोर्ड वादक श्री पंकज जोसफ, तबला पर संगतकार श्री ललित साहू एवं ड्रम वादक में श्री स्टीफन एवं मैनेजर ऑफ दी बैंड थे डॉ. धवल मवानी।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर टीम ने निम्नलिखित देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति दी–

1. ऐ मेरे वतन के लोगों.....
2. मेरा कर्मा तू.....
3. ये जो देश है तेरा स्वदेश है तेरा.....
4. ऐ वतन ऐ वतन हमको तेरी कसम.....
5. ये देश है बलिदान का.....
6. ऐ वतन के सजीले जवानों .....
7. भारत हमको जान से प्यारा है.....
8. देश मेरा.....
9. ऐ मेरे प्यारे वतन.....
10. वंदे मात्रम्,.....

उक्त प्रस्तुती के उपरांत माननीय कुलपति महोदय ने पुष्पगुच्छ देकर टीम को आशीर्वाद दिया एवं प्रोत्साहित किया। अंत में कार्यक्रम की संयोजिका प्रो. मिताश्री मित्रा ने सत्यनिष्ठ, सुसंस्कृत और गौरवपूर्ण भारत की आराधना के लिए कर्तव्य के उच्चतम आदर्शों की सृष्टि का आव्हान करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

# Golden Jubilee Celebration

## Leadership, Team Building & Adventure Course for Youth Everest Foundation, New Delhi

**September 11-16, 2013**

Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.) has organized several activities throughout the year to celebrate its Golden Jubilee Year (during May 1, 2013 to May 1, 2014). In this connection a team of 100 students of various departments of UTD sent for a Adventure Trip to Manali Hamta Valley for "Leadership, Team Building and Adventure Course for Youth" from September 11- 16, 2013, which is being organized by Everest Foundation under the leadership of Mrs. Santosh Yadav, Padmashri (Twice Everest Summitteer and Leader), Director, Everest Foundation, New Delhi. The team under the leadership of Prof. Reeta Venugopal started its journey from Raipur on 9th September 2013 by Sampark Kranti Express from Raipur to Delhi and come back on 18th September from Delhi to Raipur by Sampark Kranti. Four escorting teachers- Prof. Rajeev Choudhury, Dr. Banso Nuruti and Dr. Kamlesh Shukla of our university also accompanied the team.

On this occasion Prof. S.K. Pandey, Vice-Chancellor, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur encouraged the students by Flag –on at Rly Station. Shri K.K. Chandrakar, Registrar, Pt. RSU, Raipur and Prof. Mitashree Mitra, Chairperson, Extra-Curricular Activities of Golden Jubilee Commemoration also witnessed this glorious moment.

**SIX-DAY LEADERSHIP & ADVENTURE PROGRAMME**

The unrivalled beauty of Manali / Prini & Hamta region, which is one of the most prominent outdoors Get-a-way locations, has all the ingredients that gave the experience of a lifetime.
The challenge of the daunting mountains unnerves them, but they come out with an experience of a lifetime. Experience that enchant the team, enthral and captivate forever!
The program consists of:

1. Leadership
2. Team Building
3. Endurance: Camping, Trekking, Basic Rock Climbing
4. Aspects of Mountaineering
    a. Rope skills
    b. Abseiling / Rappelling
    c. Traversing
    d. River Crossing
    e. Backpacking
    f. Group Tasks
    g. Field Skills
    h. Survival
    i. Cooking in the outdoors
5. Group Discussions
6. Risk Assessment & Management
7. Aspects of Disaster Management – Preparedness & survival strategies in times of disaster

8. Nature Camping
9. Basic Yoga
10. Snow & Glacier Study at Rohtang Pass or nearest Snow Point

**Course Area: Mountain Upper Camp at height of 7972 fts in Hamta Valley.**
**Course Management**

Everest Foundation has designed this 6-day programme in typical Explore Himalayan style that offers additional emphasis on outdoor teaching techniques. This course is designed to develop outdoor skills and leadership besides providing comprehensive experience in the methods and philosophy of living and surviving in changeling atmosphere.

**The course begins and ends at Prini Base Camp of National School of Adventure.**

To begin with the instructors of Everest Foundation, they did review clothing and equipment of students and assisted them with issue of gear and other required items. The day was include registration, allotment of tents, a medical check up and familiarization with the campus.

Subsequently, participants were learnt basic Rock Climbing and did activities such as rappelling and learnt about climbing knots etc. The adventure trek was cover the basics of camping, cooking, stove use, "Leave
No Trace" techniques and sanitation, all fundamental skills for living comfortably and sensibly in the outdoors. During the course, the participants were lived in tents.

As the course progresses, the participants were taken part in formal, informal classes and discussions that were include agro – tourism, natural history, cultural issues, wilderness ethics, leadership, expedition behaviour and outdoor teaching techniques

The course travel over steep slopes of snow, loose rock and exposed mountain trails. Prudent route selection and adherence to Everest Foundation safety practices were minimized risks from the dangers of moving water, falling rock, falls on steep terrain, avalanches, altitude and harsh weather.

Identifying and managing mountain hazards were a constant theme of the instruction. Managing risks and assuming responsibility for ourself and our colleagues helped make this course a healthy and Rewarding experience.

During the trek / course, there were opportunities for ongoing critique. At the end, there was a formal evaluation process. Instructors provided each participant with a written evaluation and the participants in turn, get to evaluate their instructors and the program.

**Course Objectives – Leadership / Adventure Course**

Outbound Training enabled participants to learnt and experienced the challenges in an unfamiliar ground. It helped to enhance behavioral skills and qualities of an individual, bringing out latent facets of one's personality.

Interactive sessions, creative activities, nature trails, leadership, team building exercises, treasure hunts, camp fires, etc helped in building confidence among the participants and better relate to their work situations and daily life.

The programs are designed to help participants gain powerful and immediate insights into their work situation and daily life, bound & relate better with co-worker, colleagues and teachers to enhance teamwork spirit, inculcate leadership & delegation qualities, enable them to take calculated risk, communicate and planning better.

Upon the successful completion of the trek / course, each participant received a Certificate of Participation from the "**NATIONAL SCHOOL OF ADVENTURE".**

**Leadership, Team Building & Adventure Course for Youth Everest Foundation, New Delhi**

**September 11-16, 2013**

**हिन्दी अनुवाद**

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर. (छ.ग.) स्वर्ण जयंती वर्ष (1 मई 2013–1 मई 2014 ) में विभिन्न अकादमिक एवं अन्य गतिविधियों (Extra-curricular activities) का आयोजन किया गया। इसी तत्वाधान में विश्वविद्यालय के विभिन्न अध्ययन शालाओं के सौ छात्रों का एक दल प्रो. रीता वेणुगोपाल के नेतृत्व में तथा प्रो. राजीव चौधरी, डॉ. बन्सो नुरूटी एवं डॉ. कमलेश शुक्ला के साथ मनाली, हॉमता घाटी के लिए रवाना हुआ। यह दल 11–16 सितंबर 2013 तक छः दिवसीय साहसिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए श्रीमती संतोष यादव, पद्मश्री (दो बार एवरेस्ट फतह) द्वारा संचालित एवरेस्ट फॉउनडेसन संस्था द्वारा आयोजित साहसिक गतिविधियों में भाग लिया। इस संस्था की पद्मश्री संतोष यादव निदेशक है।

प्रो. शिवकुमार पाडेण्य, कुलपति पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर ने 9 सितंबर 2013 को संपर्क कांति एक्सप्रेस में इस दल को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर कुलसचित श्री के. के. चंद्राकर, अतिरिक्त गतिविधियों की प्रभारी प्रो. मिताश्री मित्रा और अन्य प्राध्यापक उपस्थित थे।

इन साहसिक गतिविधियों में भेजने का मुख्य उद्देश्य छात्रों के साहसिक पक्ष को मजबूत करना, विपरीत परिस्थितियों में संगठन शक्ति द्वारा अपने कर्तव्यों का निवाह, कुशल व्यवहार और दक्षता हासिल करना, अपनी योग्यता से व्यक्तित्व विकास, आपसी संवाद, रचनात्मक गतिविधियाँ, प्रकृति साहचर्य, नेतृत्व क्षमता का विकास एवं साथ ही साथ दैनंदनीय जीवन में आपसी संबंधों को प्रगाढ़ बनाना है।

इस कार्यक्रम को इस तरह बनाया गया है कि इसमें भाग लेने वाले छात्र विपरीत परिस्थितियों में भी संतुलन बनाए रखें, उनमें नेतृत्व क्षमता विकसित हो सके, संगठनात्मक सहयोग और दक्षतापूर्ण ज्ञान द्वारा विश्वविद्यालयीन शिक्षक और छात्र आपसी समन्वय से कार्य कर सके।

यह छः दिवसीय कार्यक्रम व्यक्तित्व विकास के लिए हिमालय श्रंख्ला में साहसिक भ्रमण करते हुए कौशल एवं नेतृत्व विकास के साथ उन्हें अपने जीवन दर्शन को समझने और प्रतिकूल परिस्थितियों में उत्तरजीविता बनाए रखने में सहायता करेगा । इसके लिए प्रिनी बेस कैंप में इस दल का स्वास्थ्य परिक्षण, नामांकन एवं आवास व्यवस्था की गई।

इस दल की गतिविधियाँ निम्नानुसार थी–

1. नेतृत्व विकास
2. संगठनात्मक विकास
3. सहनशीलता, कैपिंग, ट्रेकिंग, बेसिक रॉक क्लेबिंग (पर्वतारोहण)
4. पर्वतारोहण में–
    1. रोप स्कील
    2. एबसेलिंग
    3. ट्रेवरसिंग
    4. रीवर क्रासिंग
    5. बैक पेकिंग
    6. ग्रुप टास्क
    7. फिल्ड स्कीन(क्षेत्र कौशल)
    8. सर्वाइवल(उत्तरजीविता)
    9. कुकिंग इन द आउट डोर
5. सामूहिक चर्चा
6. समस्या मूल्यांकन एवं प्रबंधन
7. आपदा प्रबंधन के पक्ष
8. प्रकृति रहवास
9. योग
10. रोहतांग के बर्फीली हिमनद का अध्ययन करना

यह दल हिमालय के हामता घटी के 7972 फीट ऊँचाई तक पहुँचा।

इस तरह की साहसिक गतिविधियों में भाग लेने से छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होगा एवं उत्तरोत्र रूप से औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा, हिमालय संस्कृति, प्राकृतिक इतिहास, जैव विविधता, नेतृत्व क्षमता, व्यवहार कुशलता, शिक्षकीय गुण एवं नेतृत्व गुण सीख सकेगे साथ ही एक सफल नागरिक के दायित्वों का निर्वहन कर सकेंगे।

स्वर्ण जयंती वर्ष पर इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए छात्रों के इस दल को रवाना किया गया। छात्रों के दल के सफलता पूर्वक वापसी के उपरांत 29.03.2014 को पद्मश्री श्रीमती संतोष यादव द्वारा गरिमामय समारोह में छात्रों को प्रमाण पत्र वितरित किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस.के. पाण्डेय, संयोजिका प्रो. मिताश्री मित्रा, टीम लीडर प्रो. रीता वेणुगोपाल, प्रो. राजीव चौधरी, सुश्री बन्सो नुरूटी एवं डॉ. कमलेश शुक्ला उपस्थित थे।

**Golden Jubilee Lecture**

**and**

**Address and interaction with the Students and faculty of**

**Pt Ravishankar Shukla University Raipur, with Bharat Ratna**
**Dr. A.P.J. Abdul Kalam**

11 September 2013

## Science is reciprocating

I am happy to be in the campus of Pt Ravishankar Shukla University, Raipur, Chhattisgarh, which has the tradition of being teaching and research oriented. I am glad to know that every year a number of papers are published in national and international journals and also an astronomy observatory is proposed to be commissioned. I am glad to know that this university is celebrating its Golden Jubilee year. Golden Jubilee year, what does it mean? Earth rotates in its own axis and it takes 24 hours , resulting in day and night. The same planet earth orbits around the sun and takes one year for one orbit. Pt Ravishankar Shukla University Raipur is indeed in the map of planet earth and that has orbited 50 times around the sun. It is indeed a Golden orbit. I greet all the pioneers of Pt Ravishankar Shukla University, and great teachers,alumnis, and students.

Since, the Pt Ravishankar Shukla University, has multiple disciplines with 1.9 lakh students, and 26 schools of study, 234

affiliated colleges, I have selected the topic **Science is reciprocating** for my address today. Investment of individuals, organizations, nations and the world on science not only result in new discoveries and inventions but also add value to different braches of sciences and human endevours in different ways. Science comes about due to curiosity of human mind to understand through queries, thinking, observations, experiments and interpretation. Science enables both individuals and teams to progression in knowledge. The more you understand the more you realize needs to be found. The efforts of many scientists in the 19th and 20th century have improved the quality of life of human beings in multiple fields in the ensuing decades. And now it is the responsibility of us in 21st century to sow the seeds of science in areas that can benefit human kind such as renewable energy, water, ecology and environment, brain research, disease prevention. Understanding the humans, the environment and the outer space through science will help us to appreciate and contribute to the global welfare in 21st century and beyond.

Let me start my talk with four-dimensional convergence of technologies.

**Four dimensional convergence of Technologies**

The information technology and communication technology have already converged leading to Information and Communication Technology (ICT). Information Technology combined with bio-technology has led to bio-informatics. Similarly, Photonics is grown out from the labs to converge with classical Electronics and Microelectronics to bring in new high speed options in consumer products. Flexible and unbreakable displays using thin layer of film on transparent polymers have emerged as new symbols of entertainment and media tools. Now, Nano-technology has come in.

It is the field of the future that will replace microelectronics and many fields with tremendous application potential in the areas of medicine, electronics and material science. I am sure about the use of nano-robot for drug delivery.

When Nano technology and ICT meet, integrated silicon electronics, photonics are born and it can be said that material convergence will happen. With material convergence and biotechnology linked, a new science called Intelligent Bioscience will be born which would lead to a disease free, happy and more intelligent human habitat with longevity and high human capabilities. Convergence of bio-nano-info technologies can lead to the development of nano robots.

Nano robots when they are injected into a patient, my expert friends say, they will diagnose and deliver the treatment exclusively in the affected area and then the nano-robot gets digested as it is a DNA based product. I saw the product sample in one of the labs in South Korea where best of minds with multiple technology work with a target of finding out of the box solution.

**Science is reciprocating:** Let me give an example.Some time back, I was in the Harvard University where I visited laboratories of many eminent professors from the Harvard School of Engineering and Applied Sciences. I recall, how Professor Hongkun Park, showed me his

invention of nano needles, which can pierce and deliver content into individual targeted cells. That's how nano particle sciences is shaping the bio sciences. Then I met Professor Vinod Manoharan, who showed on the other hand bio sciences are in turn shaping nano material science as well. He is using DNA material to design self assembling particles. When particular type of DNA is applied on a particle at the atomic level, he is able to generate a prefixed behavior and automatic assembly from them. This could be our answer to self assembly

of devices and colonies in deep space without human intervention as envisioned by Dr K Erik Drexler. Thus, within a single research building, I saw how two different sciences are shaping each other without any iron curtain between the technologists. This reciprocating contribution of sciences to one another is going to shape our future and industry needs to be ready for it. Friends are you ready to bring down the iron curtain existing between various technological groups.

***Now, a new trend is emerging.*** The aspect being introduced is that of Ecology. Globally, the demand is shifting towards development of sustainable systems which are technologically superior. This is the new dimension of the 21st century knowledge society, where science, technology, and environment will have to go together. Thus, the new age model would be a four dimensional bio-nano-info-eco based.

When I see a large number of students, let me share how unique minds were responsible for great events in human history.

**Unique You – that is You**

Friends, to be remembered for, you have to be unique, that is Unique You. Let us study together certain unique events by unique achievers. Will all of you participate in the exercise?

**Eight unique achievers in inventions and discoveries**

Dear friends, Look up, what do you see, the light, the electric bulbs. Immediately, our thoughts go to the inventor ***Thomas Alva Edison,*** for his unique contribution towards the invention of electric bulb and his electrical lighting system.

When you hear the sound of aeroplane going over your house, whom do you think of? ***Wright Brothers*** proved that man could fly, of-course at heavy risk and cost.

Whom does the telephone remind you of ?

Of course, ***Alexander Graham Bell.***

When everybody considered a sea travel as an experience or a voyage, a unique person questioned during his sea travel from United Kingdom to India. He was pondering on why the horizon where the sky and sea meet looks blue? His research resulted in the phenomena of scattering of light. Of course, ***Sir CV Raman*** was awarded Nobel Prize.

Do you know an Indian Mathematician who did not have formal higher education but had inexhaustible spirit and love for mathematics which took him to contribute to the treasure houses of mathematical research – some of which are still under serious study and engaging all-available world mathematicians' efforts to establish formal proofs? He was a unique Indian genius who could melt the heart of the most hardened and outstanding Cambridge mathematician Prof G H Hardy. In fact, it is not an exaggeration to say that it was Prof. Hardy who discovered a great mathematician for the world. This mathematician was of-course ***Srinivasa Ramanujan*** for whom every number was a divine manifestation.

Do you know the scientist who is famous for Chandra Limit which describes the maximum mass (~1.44 solar masses) of a white dwarf star, or equivalently, the minimum mass for which a star will ultimately collapse into a neutron star to black hole following a supernova. Two of his students got the Nobel Prize before him. It is of-course the famous Nobel Laureate ***Chandrasekhar Subrmaniam*** .

Friends, there was a great scientific lady who is known for discovering Radium. She won not one, but two Nobel Prizes, one for physics and another for chemistry. Who is she? She is ***Madam Curie***. Madam Curie discovered radium and she was doing research on the effect of radiation on human system. The same radiation which she discovered, affected her and she sacrificed her life for removing the pain of human life.

When I described to you young friends, these historical eight events, you all jumped. The scientist, technologist and great human being, who created the event, are unique personalities. Young friends, can you join such unique performers of scientific history? Yes, you can. Definitely, you can. Let us study together, how it can be made possible?

Friends, I have, so far, met 15 million youth in a decade's time. I learnt, ***"every youth wants to be unique, that is, YOU! But the world all around you, is doing its best, day and night, to make you just "everybody else".*** At home, dear young friends, you are asked by your parents to be like neighbours' children for scoring good marks. When you go to school or college, your teacher says "why not you become like the first five rankers in the class".

Wherever you go, they are saying "you have to be somebody else or everybody else". Now, dear young friends, how many of you would like to be unique yourself.

***The challenge, my young friends, is that you have to fight the hardest battle, which any human being can ever imagine to fight; and never stop fighting until you arrive at your destined place, that is, a UNIQUE YOU! Friends what will be your tools to fight this battle, what are they: have a great aim in life, continuously acquire the knowledge, work hard and persevere to realize the great achievement.***

*History has proven that those who dare to imagine the impossible are the ones who break all human limitations. In every field of human Endeavour, whether science, medicine, sports, the arts, or technology, the names of the people who imagine the impossible are engraved in our history. By breaking the limits of their imagination, they changed the world.*

Now dear friends, how many of you feel confident that you will become a unique person in your specialization or a great national leader with ethics. Let me share with you the life of two unique personalities; one street boy transform into a Nobel laureate and another, generator of the green environment for which she gets Nobel prize.

**Birth of Creativity in a difficult situation**

Mario Capecchi had a difficult and challenging childhood. For nearly four years, Capecchi lived with his mother in a chalet in the Italian Alps. When World War II broke out, his mother, along with other Bohemians, was sent to Dachau as a political prisoner. Anticipating her arrest by the Gestapo, she had sold all her possessions and given the money to friends to help raise her son on their farm. In the farm, he had to grow wheat, harvest; take it to miller to be ground. The money which his mother left for him ran out. At the age of four and half years, he started living in the streets, sometimes joining gangs of other homeless children, sometimes living in orphanages and most of the time hungry. He spent the last year in the city of Reggio Emelia, hospitalized for malnutrition where his mother found him on his ninth birthday after a year of searching. Within weeks, the Capecchi and his mother sailed to United States of America to join his uncle and aunt.

He started his 3$^{rd}$ grade schooling afresh and started his education, interested in sports, studied political science. But he didn't find interesting and changed into science, became a

mathematics graduate in 1961 with a double major in Physics and Chemistry. Although he liked Physics, its elegance and simplicity, he switched to molecular biology in graduate school, on the advice of James D Watson, who advised him that he should not be bothered about small things, since such pursuits are likely to produce only small answers.

His objective was to do gene targeting. The experiments started in 1980 and by 1984, Capecchi had clear success. Three years later, he applied the technology to mice. In 1989, he developed the first mice with targeted mutations. The technology created by Doctor Capecchi allows researchers to create specific gene mutations anywhere they choose in the genetic code of a mouse. By manipulating gene sequences in this way, researchers are able to mimic human disease conditions on animal subjects. What the research of Mario Capecchi means for human health is nothing short of amazing, his work with mice could lead to cures for Alzheimer's disease or even Cancer. The innovations in genetics that Mario Capecchi achieved, won him the Nobel Prize in 2007.

Nobel laureate Capecchi's life is indeed an example for the youth to succeed by overcoming difficult problems. Capecchi's life reminds of a song from Pinocchio:-

**"When you wish upon a star,**
**Makes no difference who you are**
**Anything your heart desires**
**Will come to you"**

**Planting of trees is planting of ideas**

Now I would like to talk about Prof Wangari Maathai, who has a passion for environment and bio-diversity and is contributing to the sustainable development and growth of planet Earth. Wangari Maathai Wangari Muta Maathai was born in Nyeri, Kenya (Africa) in 1940. She was the first woman in East and Central Africa to earn a doctorate degree and to become chair of the Department of Veterinary Anatomy and an Associate Professor. Wangari Maathai was active in the National Council of Women of Kenya and was its Chairman in 1981-87, where she introduced the idea of planting trees with the people and continued to develop it into a broad-based, grassroots organization whose main focus is the planting of trees with women groups in order to conserve the environment and improve their quality of life. Through the Green Belt Movement that Nobel Laureate Prof Maathai has evolved innovatively a movement with 600

community networks across Kenya and branches in 20 countries resulting in the plantation of 31 million trees. She and the Green Belt Movement have received numerous awards, most notably The 2004 Nobel Peace Prize.

Prof Maathai gives a new meaning to the important act of planting a tree by extending it to the whole life, when she says, "the planting of trees is the planting of idea." She highlights the qualities of patience, persistence and commitment in planning and realizing a future, which is what we learn when we plant trees and wait for them to yield fruits for the next generation. She believes that no matter how dark the cloud, there is always a thin, silver lining, and that is what we must look for. The silver lining will come, if not to us then to the next generation or the generation after that. And may be with that generation, the lining will no longer be thin. India values Prof Maathai's involvement and contribution in furthering the relationship between India and Kenya and had the privilege of honouring her with the Jawaharlal Nehru Award for International Understanding for the year 2005. She concludes her Nobel Lecture on December 10, 2004 like this: quote, "As I conclude I reflect on my childhood experience when I would visit a stream next to our home to fetch water for my mother. I would drink water straight from the stream… I saw thousands of tadpoles: black, energetic and wriggling through the clear water against the background of the brown earth. This is the world I inherited from my parents". Prof. Mathaai would like all of us to preserve this inheritance.

Since, I am in the midst of the youth of this region, I would like you present my visualization of what type of India you would be in, after your educational endeavors.

**Distinctive profile of the nation**

1. A Nation where the rural and urban divide has reduced to a thin line.
2. A Nation where there is an equitable distribution and adequate access to energy and quality water.
3. A Nation where agriculture, industry and service sector work together in symphony.
4. A Nation where education with value system is not denied to any meritorious candidates because of societal or economic discrimination.
5. A Nation which is the best destination for the most talented scholars, scientists, and investors.

6. A Nation where the best of health care is available to all.
7. A Nation where the governance is responsive, transparent and corruption free.
8. A Nation where poverty has been totally eradicated, illiteracy removed and crimes against women and children are absent and none in the society feels alienated.
9. A Nation that is prosperous, healthy, secure, devoid of terrorism, peaceful and happy and continues with a sustainable growth path.
10. A Nation that is one of the best places to live in and is proud of its leadership.

**Integrated Action for developed India**

To achieve the distinctive profile of India, we have the mission of transforming India into a developed nation. We have identified five areas where India has a core competence for integrated action: (1) Agriculture and food processing (2) Education and Healthcare (3) Information and Communication Technology (4) Infrastructure: Reliable and Quality Electric power, Surface transport and Infrastructure for all parts of the country and (5) Self reliance in critical technologies. These five areas are closely inter-related and progressing in a coordinated way, leading to food, economic and national security.

I would suggest each one of you to select an important task pertaining to any of the 10 pillars which I have described based on your interest and core-competence. This will make you a partner in our national development. The teachers and students together can design projects, so that you can create a rural development model based on PURA (Providing Urban Amenities in Rural Areas) complex covering 15 to 20 villages surrounding your region. PURA envisages providing physical, electronic and knowledge connectivity leading to economic prosperity. These projects can be executed in partnership with district authorities.

**Leadership traits in management**

Dear friends, I have seen three dreams which have taken shape as vision, mission and realization. Space programme of ISRO (Indian Space Research Organization), AGNI programme of DRDO (Defence Research and Development Organization) and PURA (Providing Urban Amenities in Rural Areas) becoming the National Mission. Of course these three programmes succeeded in the midst of many challenges and problems. I have worked in all these three areas. I want to share with you what I have learnt on leadership from these three programmes.

1. Leader must have a vision.

2. Leader must have a passion to transform the vision into action.
3. Leader must be able to travel into an unexplored path.
4. Leader must know how to manage a success and failure.
5. Leader must have courage to take decision.
6. Leader should have Nobility in management.
7. Every action of the leader should be transparent.
8. Leader must work with integrity and succeed with integrity.

For success in all the missions, it is essential to have leaders who have the traits as I mentioned, and I would define them as creative leaders. Creative leadership means exercising the vision to change the traditional role from the commander to the coach, manager to mentor, from director to delegator and from one who demands respect to one who facilitates self-respect.

**Conclusion**

Since I am in the midst of young future professionals, I would like to put-forth a thought: *What would you like to be remembered for? You have to evolve yourself and shape your life. You should write it on a page. That page may be a very important page in the book of human history. And you will be remembered for creating that one page in the history of the nation – whether that page is the page of evolution of a new technological systems, the page of innovation in a way of working, or the page of creating action oriented missions for the people or the page of triumphing over diseases which have afflicted humanity for ages, or the page of contributing towards inclusive growth of the nation in a time bound manner.* You can write your views on this question and mail it to me apj@abdulkalam.com

My best wishes to all of you success in all your missions.

May God bless you.

# Oath for the students

1 I will have a goal and work hard to achieve that goal. I realize that small aim is a crime.

2 I will work with integrity and succeed with integrity.

3 I will be a good member of my family, a good member of the society, a good member of the nation and a good member of the world.

4 I will always protect and enhance the dignity of every human life without any bias.

5 I will always remember the importance of time. My motto will be “Let not my winged days, be spent in vain”.

6 I will always work for clean home, clean planet Earth and clean energy.

7 As a youth of my nation, I will work and work with courage to achieve success in all my tasks and enjoy the success of others.

8 I am as young as my faith and as old as my doubt. Hence, I will light up then, the lamp of faith in my heart.

9 My National Flag flies in my heart and I will bring glory to my nation.

# स्वर्ण जयंती व्याख्यान एवं पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के छात्रों एवं शिक्षकों के साथ परिचय

हिन्दी अनुवाद

11 सितम्बर 2013

## भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

**www.apjabdulkalam.com**

## 'विज्ञान आदान–प्रदान कर रहा है'

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में स्वर्ण जयंती व्याख्यान माला के अन्तर्गत दिनांक 11 सितम्बर 2013 सायं 6.30 बजे भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के व्याख्यान का आयोजन किया गया। उन्होंने **विज्ञान आदान–प्रदान कर रहा है** विषय पर व्याख्यान दिया। व्याख्यान का हिन्दी अनुवाद निम्नानुसार है–

मैं पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.) प्रांगण में अच्छा महसूस कर रहा हूँ, वह भी तब, जब शिक्षण और शोध उन्मुख अनुसंधान किया जा रहा है। मुझे गर्व है कि प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय शोध–पत्रिकाओं में शोध–पत्र प्रकाशित हो रहे हैं। मैं यह जानकर भी खुश हूँ कि विश्वविद्यालय में एक खगोलविज्ञान प्रयोगशाला खोले जाने का प्रस्ताव है। मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी हो रही है कि पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय अपनी स्वर्ण जयंती वर्ष मना रहा है। स्वर्ण जयंती वर्ष, इसका क्या अर्थ होता है ? पृथ्वी अपनी अक्ष पर घूमती है, इस घूर्णन में 24 घंटे लगते हैं, जिसके परिणामस्वरूप दिन–रात होते हैं। पृथ्वी को सूर्य का एक चक्कर लगाने में एक वर्ष लगता है। पं. रविशंकर रुक्ल विश्वविद्यालय पृथ्वी ग्रह के नक्शे पर वास्तव में अंकित है, जिसने सूर्य की पचास बार परिक्रमा की है, वास्तव में यह उसकी स्वर्ण–कक्षा है। मैं पं. रविशंकर विश्वविद्यालय के अग्रदूतों, महान शिक्षकों, भूतपूर्व छात्रों तथा छात्र छात्राओं को बधाई देता हूँ।

पं. रविशंकर विश्वविद्यालय में संचालित विभिन्न विषयों में 1.9 लाख छात्र, 26 अध्ययनशालाएँ, 234 संबद्ध महाविद्यालय है। जहाँ मैंने आज अपने व्याख्यान का विषय **"विज्ञान आदान–प्रदान कर रहा है"** चुना है।

विज्ञान पर व्यक्ति, संगठन, देश, विश्व, निवेश केवल नई–नई खोजों के लिए नहीं कर रहा, बल्कि वह विभिन्न विज्ञान की शाखाओं की खोजों से विज्ञान और मानव की विभिन्न धाराओं से सहसंबद्ध स्थापित करने

के लिए कर रहा है। विज्ञान संबंधित प्रश्न, हमारी मानवीय समझ, सोच, टिप्पणियाँ, प्रयोंगों, व्याख्यानों को समझने के लिए आते हैं। इसका कारण यह है कि विज्ञान, ज्ञान और प्रगति दोनों पक्षों में संतुलन बनाता है। जितना अधिक आप अनुभव कर सकेंगें उतना ही इसे समझ सकते हैं। 19 वीं शताब्दी और 20 वीं शताब्दी के अनेक वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों से आगामी दशकों में गुणवत्ता युक्त जीवन–सुधार हुआ है। इससे अक्षय ऊर्जा, पानी, पारिस्थितिकी, पर्यावरण के अनुसंधान से रोगों की रोकथाम एवं मानव जाति को लाभ हो सकता है। 21 वीं शताब्दी में विज्ञान के बीज बोना हमारी जिम्मेंदारी है। जिसमें मनुष्य को विज्ञान के माध्यम से प्यावरण, अंतरिक्ष के बाह्य स्वरूप को समझना है, ताकि हम 21 सदी और इससे आगे भी विश्व के मानव का कल्याण कर सके।

मुझे प्रौद्योगिकी के चार अभिकरणों से अपनी बात शुरू करने दीजिए।

**प्रौद्योगिकी अभिकरण के चार स्तंभ :**

सूचना पौद्योगिकी और संचार प्रौद्योगिकी पहले से ही सूचना और संचार अभिकर्णित हो चके हैं। सूचना प्रौद्योगिकी, जैव–प्रौद्योगिकी के साथ जुड़कर जैव–सूचना प्रौद्योगिकी के नये आयामों का दर्शाता है। इसी तरह फोटोनिक्स उपभोक्ता आधारित उत्पादन में गतिशीलता लाने के लिए परंपरागत यांत्रिकी और सूक्ष्म यांत्रिकी प्रयोगशाला से जनमानस तक उत्पादन अधिक शीघ्रता से आने लगे हैं। लचीली एवं बिना रिक्त स्थान वाले पारदर्शी पालिमर का उपयोग नये मनोरंजन तथा मीडिया की सामग्री के रूप में हो रहा है। यह तकनीकी मनोरंजन भविष्य में सूक्ष्म इलेक्ट्रानिक्स द्वारा पुनर्चक्रण संभव हो जाएगा और चिकित्सा, यांत्रिकी, तत्व–विज्ञान में शक्ति का पुनः उपयोग किया जा सकेगा।

जब नैनो तकनीकी, संचार और सूचना तकनीकी मिलती है तो एक नई जैव विज्ञान का जन्म होता है। एकीकृत सिलिकॉन इलेक्ट्रॉनिक्स से फोटॉन पैदा होता है यह क्रिया अभिसरण कही जा सकती है। जब इस नई तकनीकी का जन्म होगा, तब जैव प्रौद्योगिकी के साथ उच्च क्षमताओं वाला, बुद्धिमान, दीघार्यु, रोगमुक्त मानव

होगा यह कहा जा सकता है। इस जैव नैनो प्रौद्योगिकी रोबोटों का विकास संभव हो सकेगा। मेरे विशेषज्ञ मित्रों का कहना है, ''यह नैनो जैव रोबोट्स रोगी के अंदर प्रवेश किया जा रहा है जो रोग से प्रभावित अंग को ठीक करता है।'' नैनों जैव रोबोट विशेष रूप से डी.एन.ए. (DNA) आधारित उत्पाद है। मैंने दक्षिण कोरिया की प्रयोगशाला में ऐसे उत्पाद का नमूना देखा है, जहाँ नई तकनीकी कार्य, लक्ष्य आधारित डी.एन.ए. (DNA) बॉक्स से समाधान किए जा रहे हैं।

**विज्ञान आदान–प्रदान कर रहा है**

मैं पिछला एक उदाहरण देता हूँ। मैं हार्वड विश्वविद्यालय में था, मैं कई प्रयोगशालाओं में गया, कई प्रायोगिक विज्ञान के प्रतिष्ठित प्राध्यापकों से मिला अभियांत्रिक अध्ययनशाला और प्रायोगिक विज्ञाान के प्रोफेसर हॉनकांग पार्क ने बताया कि कैसे एक नैनो सुई का अविष्कार किया गया है, जो लक्षित कोशिकाओं तक पहुँच सकती है, अर्थात् कैसे नैनो कण विज्ञान जैव विज्ञान को आकार दे रहे हैं। इसके बाद में प्रोफेसर विनोद मनोहरन से मिला उन्होंने दिखाया जैव विज्ञान किस तरह नैनो कण विज्ञान का आकार ले रहा है। उन्होंनें डी.एन.ए. कोंडातरण कणों का उपयोग कर एक स्वतंत्र कण को आकार दिया है। जब डी.एन.ए. (DNA) का एक परमाणु स्तर कण लिया जाता है तो वह अपने आप पहले जैसा व्यवहार करने लगता है और वह जुड़ जाता है। यह परिलक्षित रूप में बिना मानव हस्तक्षेप के उपकरणों एवं गहन आंतरिक विषयों के लिए हमारा जवाब हो सकता है। मैंने देखा किस तरह दो अलग–अलग विज्ञान के बीच बिना मजबूत पर्दे के प्रोद्योगिकीविद्ों द्वारा कार्य संपन्न किया जा रहा है। इस तरह विज्ञान के आदान–प्रदान का विभाजन भविष्य में एक सुरक्षित उद्योग के लिए तैयार होना चाहिए। मित्रों, क्या आप तैयार हैं, इस मजबूत पर्दे को मानव उपयोग में लाने के लिए।

**अब एक नया बिंब बन रहा है**

पारिस्थितकी के महत्वपूर्ण पक्ष से परिचय कराता हूँ। वैश्विक माँग के अनुरूप तकनीकी दृष्टि से उन्नति बेहतर कर रहे हैं। यह स्थाई प्रणालियाँ विकास को दिशा दे रही है। हमें परिस्थितियों के साथ प्रौद्योगिकी की ओर जाना है। 21 वीं सदी में एक नया बौद्धिक समाज है। जो विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं पारिस्थितकी से जुड़कर (चार आयामी) नया जैव–नैनो–सूचना–परिस्थितकी आधारित मॉडल (निदर्श) से बना है।

जब मैं विद्यार्थियों की बड़ी संख्या देखता हूँ, तब लगता है मानव की अद्वितीय बुद्धि इतिहास मेंमहान घटनाओं के लिए जिम्मेंदार थी।

**आप अद्वितीय है–यह आप है।**

मित्रों, आप अद्वितीय है। इसके लिए आपको याद किया जाएगा। अद्वितीय उपलब्धि हासिल करने के लिए अद्वितीय घटनाओं का अध्ययन करना पड़ता है, क्या आप सभी इस अभ्यास में शामिल होंगें ?

**अविष्कार और खोज करने वाने आठ अद्वितीय व्यक्ति**

प्रिय मित्रों, ऊपर देखो, आपने क्या देखा ? प्रकाश युक्त विद्युत बल्ब। आप तुरंत सोचने लगते हो अद्वितीय आविष्कार करने वाले का योगदान। इसे जानने के लिए बल्ब के आविष्कारक **थॉमस अल्वा एडिसन** के पास जाओ।

जब आप घर के ऊपर से जाते हवाई जहाज की आवाज सुनते हैं तो आपको लगता है **राइट्स ब्रदर्स** ने बेहद जोखिम/लागत भरी उड़ान भरी। वस्तुतः उन्होंने साबित किया कि आदमी उड़ सकता है।

दूरभाष से कितनी संभावनाएँ है। बेशक यह **अलेक्सजेन्डर ग्राहम वेल** के कारण।

जब कोई एक अनुभव भरी समुद्री यात्रा करता है, एक अद्वितीय आदमी जिसने संयुक्त राज्य से भारत की यात्रा की उसके समक्ष एक प्रश्न आ रहा था। उसने देखा समुद्र और आकाश जहां मिल रहा वहाँ नीला दिखाई दे रहा है। उसने देखा समुद्र और आकाश नीला दिखाई दे रहा था। उन्होंनें प्रकाश प्रकीर्णन पर शोध कार्य किया। इस पर उन्हें नोगल पुरस्कार मिला, वे हैं–**सर सी.वी. रमन।**

क्या आप उस भारतीय गणितज्ञ को जानते हैं जिन्होंने औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाई, लेकिन उनका गणित के प्रति रागात्मक लगाव रहा। उनकी खोजों को जानने के लिए अभी भी अध्ययन चल रहे है। उनकी गणित संबंधी औपचारिक खोजों के सबूत जुटाने में अब भी विश्व के गणितज्ञ उलझे हुए है, वे थे अद्वितीय भारतीय मानव। इनकी खोजों के लिए कैम्ब्रिज प्रोफेसर जी.एच. हॉर्डी का दिल पसीज गया, उनका मानना है कि यह एक अनूठी प्रतिभा थी। वास्तव में उसने दुनिया के लिए एक महान गणित की खोज की इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं, ये गणितज्ञ थे–**श्रीनिवास रामानुजन,** जिन्होंने अंकों को एक दिव्य अभिव्यक्ति दी।

क्या आप उस प्रसिद्ध वैज्ञानिक को जानते हैं जिन्होंने एक निश्चित द्रव्यमान (–1.44 सौर द्रव्यमान) वाले तारे के गिरने से ब्लेक होल होने और असीमित उर्जा उत्पन्न होने की क्रिया को बताया, जिसे सुपरनोआ कहा गया। इस कार्य के लिए उन्हें नोबल पुरस्कार मिला। ये प्रसिद्ध नोबल विजेता–**चंद्रशेखर सुब्रामणयम।**

मित्रों, रेडियम की खोज के लिए एक महान महिला वैज्ञानिक को जाना जाता है, जिन्हें एक नहीं दो नोबल पुरस्कार मिले। एक भौतिकशास्त्र के लिए और एक रसायनशास्त्र के लिए। वे कौन थी ? वे थी **मैडम**

**क्यूरी।** उन्होंने रेडियो एक्टिव तरंगों पर शोध कार्य किया। उन्होंने उन विकिरणों को अपने उपयोगी बनाया, जिससे मनुष्य की पीड़ा कम हो और वह सामान्य मानव–जीवन जी सके।

युवा मित्रों, मैनें ये आठ ऐतिहासिक उपलब्धियों को आपके सामने रेखांकित किया, ताकि आप सभी उत्साहित हों। ये वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीविद्, महान व्यक्तित्व कैसे मानव समुदाय के विभिन्न पक्षों पर ध्यान देते हैं, ये अद्वितीय व्यक्तित्व हैं। युवा मित्रों आप भी अद्वितीय व्यक्तित्व के इतिहास में जाने जा सकते हैं। हाँ, आप कर सकते हैं, निश्चित रूप से कर सकते हैं, यह संभव हो सकता है। आइए हम एक साथ अध्ययन करें।

मित्रों, मैं अब तक एक दशक में 15 लाख युवाओं से मिला हूँ। मुझे लगता है कि **प्रत्येक युवा अद्वितीय बनना चाहता है, आप भी ! लेकिन पूरी दुनिया आपके आसपास है। बेहतर करने के लिए वह दिन–रात कड़ी मेहनत कर रहा है। आप सब भी।** अपने घर में, प्रिय मित्रों, आप अपने पड़ोसियों की तरह होना चाहते हैं, हर विद्यार्थी अच्छे अंक लाने के लिए विद्यालय और महाविद्यालय जाता है। आपके शिक्षक कहते है–**आप अपनी शिक्षा से कक्षा की प्रवीणता में पाँचवें स्थान तक क्यों नहीं आ पाए ?** आप जहाँ भी जाएँ वे कहते रहे हैं–आप में क्षमता है, आप प्रत्येक में वह गुण है। अब, दोस्तों आप में से कितने अद्वितीय होना चाहते हैं।

**चुनौती, मेरे युवा मित्रों, आपकी कठिन लड़ाई है और इस लड़ाई की कल्पना केवल इंसाान ही कर सकता है और यह संघर्ष अपने लक्षित स्थान तक पहुँचने तक करो, क्योंकि आप अद्वितीय है। मित्रों, इस लड़ाई के लिए क्या संसाधन होंगें ? वे क्या रहे है, जीवन का महान उद्देश्य लगातार ज्ञान प्राप्त करने की चाहत, कड़ी मेहनत दृढ़ विश्वास कि महान उपलब्धि के लिए, अनुभव के लिए कार्य कर रहे हैं।**

इतिहास असीमित कल्पना करने के लिए हिम्मत देता है। मानव सभी सीमाओं को तोड़ रहे हैं यह साबित हो गया है। विज्ञान, चिकित्सा, खेल, कला, प्रौद्योगिकी असीमित कल्पना जो लोंगों के नाम हमारे इतिहास में दर्ज है। मानव हर क्षेत्र में पहुँचा है, उसने कल्पनाओं की सीमा तोड़कर दुनिया बदल दी है।

अब प्यारे दोस्तों, आप में से कितने लोग यह अनुभव करते है कि अपनी विशेषता या नैतिकता के साथ एक महान नेता, एक अद्वितीय व्यक्तित्व बन पाएँगे। मुझे विश्वास है, मैं आपके साथ दो अद्वितीय व्यक्तित्वों को सामने रखता हूँ। एक वह जो सड़क का लड़का जिसने नोबल पुरस्कार प्राप्त किया व दूसरा जिसे हरित क्रांति के लिए नोबल पुरस्कार मिला।

### विपरीत परिस्थितियों में रचनात्मक जन्म

मारियो केपेच्ची के बचपन का जीवन कठिन और चुनौतीपूर्ण था। लगभग चार वर्ष की आयु में केपेच्ची अपनी माँ के साथ आलप्स के एक शैले (लकड़ी के बना मकान) में रहते थे। जब द्वितीय युद्ध

हुआ उसकी माँ को अन्य राजनैतिक कैदी बोहेमियनों के साथ डचउ भेज दिया गया। गेस्टापों द्वारा अपनी गिरफ्तारी की आशंका से उसने अपनी पूरी संपत्ति बेच दी और प्राप्त पैसे और फार्म हॉउस (खेत) अपने बेटे को पालने के लिए मित्रों को दे दिए। उसने पक गई गेहूँ की फसल काटकर मीलर को दे दी। उसकी माँ के पैसे खत्म हो गए इस समय वह साढ़े चार साल का था वह सड़कों पर रहते हुए अन्य सड़कों पर रहने वाले अनाश्रित बच्चों के समूह में शामिल हो गया। उसने गलियों में रहना शुरू किया। उसने पिछला एक साल रेगियो इमेला शहर में बिताया। उसकी माँ ने उसकी खोज की 9 वें जन्मदिवस पर एक कुपोषितों के अस्पताल में वह मिल गया जहाँ वह भर्ती था। एक सप्ताह में केपच्ची और उसकी माँ अपने चाचा–चाची से मिलने संयुक्त राज्य अमेरिका रवाना हुए।

उसने वहाँ तीसरे दर्जे की विद्यालयीन शिक्षा नए सिरे से आरंभ की। उसे खेल में रूचि थी और राजनीति की पढ़ाई में, लेकिन उसकी दिलचस्पी विज्ञान की ओर होने लगी। उसने गणित सहित दो मुख्य विषयों–भौतिकशास्त्र और रसायनशास्त्र के साथ 1961 ई. में स्नातक उपाधि प्राप्त की। उसे भौतिक शास्त्र पसंद थी और प्रकृति की सादगी। उसने जेम्स डी. वाट्सन की सलाह पर विद्यालय में बंद आणविक जीवविज्ञान की गतिविधियों और उत्पादन की जानकारी दी। जेम्स डी. वाट्सन ने उसे प्रोत्साहित किया और कहा कि छोटी बातों की परवाह नहीं की जानी चाहिए, केपेच्ची के लिए यह छोटा उत्तर था।

उसका उद्देश्य जीन लक्षित था। 1980 ई. में उसने अपना प्रयोग आरंभ किया और 1984 ई. में केपेच्ची को सफलता मिल गई। तीन वर्षों बाद उसने अपना प्रयोग चूहों पर किया। 1989 ई. में शोध उसने अपने लक्षित प्रौद्योगिकी के माध्यम से चूहों का विकास किया। जीन को परिवर्तित (छेड़छाड़) करके शोधकर्ताओं ने पशु–विषयों के आधार पर मानव रोगों की नकल की। क्या यह अद्भूत नहीं मानव स्वास्थ्य के लिए ? केपच्ची के इस शोध का क्या मतलब है ? इस प्रौद्योगिकी का उपयोग चूहों के साथ अल्जाइमर रोग यहाँ तक कि कैंसर के इलाज के लिए किया जा सकता है। मारियों केपच्ची ने आनुवांशिक तकनीकी इजात की। उन्हें 2007 में नोबल पुरस्कार मिला।

नोबल पुरस्कार प्राप्तकर्ता मारियो केपच्ची का जीवन संघर्ष, कठिनाईयों में सफल होने के लिए युवाओं के लिए एक उदाहरण है।

केपच्ची का जीवन एक पिनोक्कयो गीत याद दिलाता है–

जब तुम एक तारा बनने की चाहत रखते हो,

तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ता

तुम्हारी दिल की इच्छाएँ कितनी भी हों

पूरी होंगी।

## पौधरोपण विचारारोपण है

अब मैं प्रोफेसर वांगरी मथाई के बारे में बात करना चाहूँगा, जो जैव विविधता, पारिस्थितिकी और पृथ्वी पर पौधरोपण के सतत विकास के लिए योगदान दे रहे हैं। वांगरी मथाई, वांगरी मुटा मथाई का जन्म नाईरी, केन्या (अफ्रीका) में 1940 ई. को हुआ। वे पहली महिला है जिन्हें पूर्वी और मध्य अफ्रीका में शोध उपाधि (डॉक्टरेट) मिली और पशु चिकित्सा (Veternory Anatomy) की सह प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष हैं। वे राष्ट्रीय महिला परिषद् में सकिय रही और 1981–87 ई. में उसकी अध्यक्ष थीं। उन्होंने पौध रोपण का विचार प्रस्तुत किया जिसका प्रमुख लक्ष्य व्यापक आधार वाली जमीन पर संगठन स्तर की महिलाओं द्वारा व्यापक स्तर पर पौध रोपण करना, पर्यावरण संरक्षण करना और जीवन–स्तर में सुधार लाना। नोबल पुरस्कार विजेता प्रोफेसर माथाई के 600 समूहों के जाल (नेटवर्क) ने केन्या में और 20 देशों में अपनी शाखाओं के माध्यम से 31 लाख पौध रोपण किया है। मथाई और उनके ग्रीन वेल्ट को कई पुरस्कार मिले है, 2004 को इस योगदान के लिए नोबल शांति पुरस्कार प्राप्त हुआ।

प्रोफेसर मथाई ने वृक्षारोपण के महत्व, और एक पौधे से पूरे जीवन में आए सुधार को एक नया अर्थ दिया है। वे कहती है–**पौधरोपण विचारारोपण है।** उन्होंनें प्रकाश डाला कि धैर्य का गुण, सतत् और दृढ़ प्रतिबद्धता योजना को भविष्य में मूर्त दे देता है, यह हमें सीख देता है कि कितना भी बादलों–सा उंधेरा हो उसमें एक पतनी–सी उम्मीद की किरण है। और हमें विचार करना चाहिए कि यह उम्मीद की किरण एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक आती रहेगी और हो सकता है कि यह पीढ़ी से पीढ़ियों तक आती रहेगी। भारत, प्रोफेसर मथाई की, भारत और केन्या के बीच भागीदारी और योगदान तथा संबंधों को आगे बढ़ाने का सम्मान करता है। वे अंतरराष्ट्रीय समझ के लिए 2005 के जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार से सम्मानित हुई है। उन्होंने 10 दिसम्बर 2010 को नोबल व्याख्यान में अपने बचपन के अनुभवों को सारांश रूप में प्रस्तुत किया कि–''मैं अपनी माँ के लिए पानी लाने अपने घर के बगल पानी स्त्रोत में गई, मैने सोचा सीधे पानी पी लूँ..... मैने देखा साफ पानी में हजारों की संख्या में काले रंग के टैडपोल, ऊर्जावान पृथ्वी की भूरी तलछटी में है। यह विश्व है। **मैं अपने माता–पिता से प्रभावित हुई।** प्रोफेसर मथाई द्वारा व्यक्त विरासत को हमें संरक्षित करना है।

चूकि मैं इस क्षेत्र के युवाओं के बीच हूँ, मुझे लगता है मै अपनी लक्षित बातें करूँ कि मेरा भारत कैसा होगा–

## एक अलग तरह के मेरे भारत का विवरण

1. एक ऐसा राष्ट्र जहाँ ग्रामीण और शहर के बीच विभाजन रेखा कम हो जाए।
2. एक ऐसा राष्ट्र जहाँ एक समान ऊर्जा और शुद्ध गुणवत्ता युक्त पानी की पहुँच हो।
3. एक ऐसा राष्ट्र जहाँ कृषि, उद्योग और सेवा–क्षेत्र में लोग एक साथ कार्य करते हों।
4. एक ऐसा राष्ट्र जहाँ मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली देने के लिए बिना आर्थिक भेदभाव के मेधावी छात्रों को इनकार नहीं किया जाए।
5. एक ऐसा राष्ट्र जिसमें प्रतिभाशाली विद्वानों, वैज्ञानिकों, निवेशकों का सर्वश्रेष्ठ योगदान हो।
6. एक ऐसा राष्ट्र जहाँ सभी बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध हों।
7. एक ऐसा राष्ट्र जहाँ शासन संवेदनशील, पारदर्शी और भ्रष्टाचारमुक्त हो।
8. एक ऐसा राष्ट्र जहाँ गरीबी को पूरी तरह उन्मूलन कर दिया गया हो निरक्षरता खत्म कर दी गई हो, और बच्चों तथा महिलाओं के खिलाफ अपराध न हो, और कोई भी समाज–विमुख न हो।

9. एक ऐसा राष्ट्र जो समृद्धि, स्वास्थ्य, सुरक्षित, आतंकवाद मुक्त, शांतिपूर्ण और खुशहाल तथा विकासोन्मुख हो।
10. एक ऐसा राष्ट्र जो कि निवास के लिए सर्वोत्तम स्थानों में हो और राष्ट्र अपने नेतृत्व पर गर्व करता हो।

## विकसित भारत के लिए एकीकृत कार्य

हमारा ध्येय विकसित भारत का विवरण प्राप्त करने के लिए, विकसित राष्ट्र के रूप में बदलने का है। (1) कृषि और खाद्य संस्करण (2) शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधा (3) सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (4) विश्वसनीय और गुणवत्ता युक्त बिजली, सड़क परिवहन और भारत की एकीकृत इकाइयों के लिए आधारभूत ढाँचा और पाँचवा। (5) तकनीकी में आत्म निर्भरता।

इन पाँच क्षेत्रों की हमने पहचान की है जो आपस में जुड़े हुए हैं। भोजन, आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए समन्वित कार्य चल रहे हैं।

मैंने उपर्युक्त बाते कही। मैं आप प्रत्येक को सलाह देना चाहता हूँ कि उपर्युक्त 10 आधार–स्तंभ में कोई एक कार्य को चुने। आपको राष्ट्र के विकास में भागीदारी बनना होगा। शिक्षक और छात्र ग्रामीण विकास आधारित PURA (ग्रामीण क्षेत्र में शहरी सुविधाएँ प्रदान करना) से ग्रामीण विकास मॉडल बना सकने हैं। इस परियोजना में आपके क्षेत्र के 15–20 गाँव आ सकते हैं। पूरी परिकल्पना, आर्थिक समृद्धि के लिए, भोतिक, यांत्रिकी और ज्ञान–संचार करते हैं। इन परियोजनाओं को जिले के अधिकारियों के साथ साझेदारी करके क्रियान्वित किया जा सकता है।

## प्रबंधन में नेतृत्व गुण

प्रिय मित्रों, मैंने तीन सपने–दृष्टिकोण, ध्येय और एहसास देखे। तीनों ने आकार ले लिया हैं। इसरो (ISRO) का अंतरिक्ष कार्यक्रम (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) डीआरडीओ (DRDO) का अग्नि कार्यक्रम (रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन ) और पुरा (PURA) (ग्रामीण क्षेत्र में शहरी सुविधाएँ प्रदान करना) ये राष्ट्रीय कार्यक्रम हैं। मैं आपके साथ साझा करना चाहता हूँ कि इन तीनों कार्यक्रमों से नेतृत्व के क्या गुण सीखे।

1. नेता में एक दृष्टिकोएा होना चाहिए।
2. नेता में कार्यवाही के दौरान दृष्टिकोण बदलने का जुनून होना चाहिए।
3. नेता में हर परिस्थिति में चलने के सक्षम होना चाहिए।
4. नेता में सफलता और विफलता में संतुलन बनाए रखना चाहिए।
5. नेता में निर्णय लेने का साहस होना चाहिए।
6. नेता को प्रबंधन में भेदभाव रहित होना चाहिए।
7. नेता की प्रत्येक कार्यवाही पारदर्शी होनी चाहिए।
8. नेता ईमानदारी के साथ कार्य करे और ईमानदारी से सफल हो।

ये लक्षित बिन्दु सभी कार्यक्रमों में सफलता के लिए है, जिन्हें मैंने बताए हैं। और मैं सक्रिय नेता के बारे में बताना चाहूँगा। सक्रिय नेता का मतलब जो लक्ष्य के लिए प्रयासरत, कप्तान से अनुशिक्षक (coach), प्रबंध से

परामर्शदाता (mentor), निदेशक से प्रतिनिधि (delegator), परिस्थिति एवं माँग अनुरूप अपनी सम्मानजनक भूमिका का निर्वहन करे।

## निष्कर्ष

मैं युवा भविष्य के प्रवेशरों के बीच हूँ। मैं एक जोर देना चाहता हूँ कि क्या आपके लिए क्या याद किया जाना चाहिए ? आपने अपने को विकसित करके जीवन आकार दिया है। आप अपने को एक सफेद पृष्ठ पर लिख सकते हैं। मानव इतिहास की उस किताब में वह पृष्ठ बहुत ही महत्वपूर्ण हो सकता है और आप देश के इतिहास में पृष्ठ बनाने वालों के लिए याद किए जाएँगे। उस पृष्ठ पर एक नई तकनीकी प्रणालियाँ, कार्य करने का नवन्मेष तरीका, या क्रियाशील लोग जिन्होंने रोगियों के रोगों पर विजय पाने के लिए, मानवता के लिए, समयबद्ध ढंग से देश का विकास किया। समग्र विकास की दिशा में सहभागिता का पृष्ट।

आप अपने प्रश्न और विचार मुझे लिख भेज सकते हैं।–

ई–मेल :–apj@abdulkalam.com

आप अपने ध्येय पर सफल हों, मेरी शुभकामनाएँ।

ईश्वर आपका भला करे।

## छात्रों के लिए शपथ :

1. मैं एक लक्ष्य निर्धारित करूँगा और उसे पाने के लिए कड़ी मेहनत करूँगा, मैं यह अनुभव करूँगा कि छोटा लक्ष्य एक अपराध है।
2. मैं ईमानदारी से काम करूँगा और ईमानदारी से सफल होऊँगा।
3. मैं परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व का एक अच्छा सदस्य बनूँगा।
4. मैं पूर्वाग्रहों से मुक्त रक्षा और मानव जीवन की गरिमा में वृद्धि करूँगा।
5. मैं हमेशा समय के महत्व को समझूँगा, मेरा आदर्श वाक्य होगा–''जब तक मेरे हाथ–पाँव चले समय व्यर्थ न जाए।''
6. मैं हमेशा स्वच्छ घर, स्वच्छ ग्रह पृथ्वी और स्वच्छ पानी ऊर्जा के लिए कार्य करूँगा।
7. मैं राष्ट्र के एक युवा के रूप में कार्य करूँगा और अपने सभी कार्यों में सफलता प्राप्त करूँगा जो साहस के साथ कार्य करते हैं, उनकी सफलता में आनंदित होऊँगा।
8. मैं एक विश्वासपात्र युवा के रूप में, मेरे जितने पुराने विचार हैं, उन्हें अपने हृदय के प्रकाश से प्रकाशमान करूँगा।
9. मेरा राष्ट्रध्वज मेरे दिन में उड़े और गौरव प्राप्त करे, ऐसा करता रहूँगा।

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती व्याख्यान कार्यक्रम में स्कूली एवं विश्वविद्यालय के छात्रों ने विशेष रूप से भाग लिया एवं कई प्रश्न कर अपनी जिज्ञासा शांत की।

# SPIC MACAY (Society for the Promotion of Indian Classical Music and Culture Amongst Youth): National School Programme of Intensive?

## 19.10.2013

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय अपने स्वर्ण जयंती वर्ष में युवाओं को भारतीय पारंपरिक संस्कृति से उसके मूल रूप से परिचित कराने एवं अपनी संस्कृति के गरिमापूर्ण सौदंर्य एवं वैभवशाली समृद्ध कलाओं से परिचित कराने तथा युवाओं को सांस्कृतिक रूप से शिक्षित करने के उद्देश्य से स्पिक मैके के सौजन्य से दिनाँक 19.10.13 को विश्वविद्यालय प्रेक्षागृह में सांस्कृतिक धरोहर के विशिष्ट आयाम 'शहनाई वादन' का आयोजन किया गया। इसमें कलाकारों के साथ युवा वर्ग को रूबरू करने का अवसर भी मिला। शहनाई वादन की प्रस्तुती दी उस्ताद अली अहमद हुसैन खाँ एवं उनके साथ शहनाई पर अहमद अब्बास खाँ, एवं हसन हैदर खाँ ने साथ दिया। सुरमण्डल पर सुजात अब्बास खाँ, सुरपेटी पर मो. सोहेल खाँ एवं तबले पर अशोक कुर्म ने संगत की। इस अवसर पर अर्थशास्त्र अध्ययनशाला के छात्र नदिया राजीव ने कलाकारों की जीवनी का पाठन किया एवं विद्यासागर ने कार्यक्रम का संचालन किया। माननीय कुलपति महोदय प्रो. एस.के. पाण्डेय ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए इस अवसर पर सभी छात्रों से **'स्पिक मैके क्लब'** से जुड़ने का आग्रह किया जिसके लिये कोई सदस्यता शुल्क नहीं है। स्पिक मैके क्लब का सदस्य बनने का उदेद्श्य छात्रों में कला एवं संस्कृति के प्रति रूझान पैदा करना, उनमें दायित्व की भावना जागृत करना एवं 'स्पिक मैके' के संदेश को अपने परिवर्ती छात्रों तक पहुंचाना है ताकि वे अपनी संस्कृति की जड़ो से परिचित हो सके।

## स्वर्ण जयंती व्याख्यान

## पद्म विभूषण श्री अनिल काकोडकर

## Emerging Energy Challenges and Opportunities

**03.12.2013**

विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती के अवसर पर दिनांक 03.12.2013 को पद्म विभूषण श्री अनिल काकोडकर व्याख्यान का आयोजित किया गया, उन्होंने अपना उद्‌बोधन ऊजो की उभरती चुनौतियाँ एवं अवसर (Emerging Energy Challenges and Opportunities) पर दिया।

पद्म विभूषण श्री अनिल काकोडर जी ने विश्वविद्यालय के सभी छात्र–छात्राओं, शिक्षक–गणों एवं कर्मचारी गणों को संबोधित करते हुए अपने उद्‌बोधन में कहा कि 50 साल कोई ज्यादा समय नहीं होता। जहाँ दुनिया में कई जगह है और भारत में भी पुराने काल में भी ऐसी संस्थाएँ थी, विश्वविद्यालय थे, यहाँ ऐसे भी विश्वविद्यालय थे जो 200–300 साल पुराना हैं। विश्वविद्यालय द्वारा एक लम्बा कार्यकाल पूरा करते हुए सर्वोच्चता बनाए रखना एक चुनौती है। विश्वविद्यालय का कार्य न केवल ज्ञान देना या अर्जन करना है व आस–पास के क्षेत्रों एवं परिवेशों का विकास करने में भी मुख्य योगदान होता है।

उन्होंने अपने वक्तव्य का शुभारंभ करते हुए ऊर्जा की प्रत्यक्ष स्थिति एवं आने वाले समय में इसकी स्थितियों के बारे में चर्चा की। दुनिया में तेल की बढ़ती कीमत एवं उसका हमारी अर्थ–व्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ता है, उससे आप परिचित हैं। ऊर्जा समस्या, दुनिया में उसकी क्या परिस्थिति है, एवं आने वाले 30–40 वर्षों में क्या परिस्थितियाँ हो सकती है उस पर चर्चा करते हुए भारत देश में ऊर्जा की क्या परिस्थितियाँ है, एवं आने वाले समय में क्या हो सकती हैं इस पर भी ध्यान आकर्षित किया।

उन्होंने बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था को, विकसित एवं विकासशील देशों के संदर्भ में बताते हुए कहा कि भारत देश की अर्थव्यवस्था विकसित देशों की तुलना में कम हैं लेकिन हमारी विकास दर विकसित देशों से अधिक है। विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था 2040 तक, विकसित देशों की तुलना में बढ़ने की संभावना है। यह निष्कर्ष अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा संगठन अपने अनुसंधान के आधार पर दिया है। अगर हमारा देश उन्नत अर्थव्यवस्था चाहता है तो हमें ऊर्जा की आवश्यकता होगी। इसके प्रमुख स्त्रोत जीवाश्म ऊर्जा है जैसे– कोयला, तेल आदि ऊर्जा है। दूसरे स्त्रोत नवीनीकरण ऊर्जा एवं तीसरा नाभकीय ऊर्जा है। राष्ट्रीय एवं

अतर्राष्ट्रीय स्तर पर की गई चर्चाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकला कि ऐसी ऊर्जा का उत्पादन किया जाए जिसमें कार्बन–डाई–ऑक्साइड का उत्सर्जन कम हो, जिससे मौसमी बदलावों पर ज्यादा प्रभाव न पड़े।

विकसित देशों में कम कार्बन उत्पादन करने वाले ऊर्जा का प्रयोग करना आरंभ किया हुआ है जिसके कारण विकासशील देशों पर दबाव है कि वह भी कम कार्बन उत्पादन करने वाले ऊर्जा स्त्रोतों का प्रयोग करें। इस संदर्भ में जीवाश्म ऊर्जा का प्रयोग कम करने पर भी दबाव डाला गया। विकसित देशों की ऊर्जा की आवश्यकताएँ समाप्त हो चुकी है। लेकिन विकासशील देशों में अभी उन्नति होना बाकी है क्योंकि हमें अर्थव्यवस्था विकसित करनी हैं कम कार्बन उत्पादन करने वालें स्त्रोतों के माध्यम से विकसित देशों में चीन भविष्य में 30 वर्ष बाद कार्बन का उत्सर्जन बढ़ जाएगा। वर्तमान में विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों द्वारा कार्बन का उत्सर्जन कहीं अधिक और बढ़ जाएगा तो उसके लिए हमारे देश को पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने के लिए और अधिक जगह की आवश्यकता होगी, जो पहले से ही विकसित देशों ने ले ली है। जिसके कारण हमारे लिए उसमें स्थान नगण्य के बराबर रह गया है।

इस प्रकार से यह हमारे देश के लिए दोहरी चुनौती बनती जा रही है। यह चुनौती हमें हर क्षेत्र में परिलक्षित होती है चाहे वह ऊर्जा संसाधन के उपलब्धियों का विषय हो या कार्बन उत्सर्जन दर को कम करने का विषय हो। आगे उन्होंने ग्लोबल वार्मिंग विषय पर चर्चा करते हुए उसके साक्ष्य के रूप में आँकड़े प्रस्तुत करते हुए कहा कि धरातल के तापमान में कितनी अधिक तीव्रता से वृद्धि होती जा रही है। इस विषय में अनुसंधान भी हुए हैं और वर्तमान में यह पूरे विश्व के लिए सबसे बड़ी समस्या बनती जा रही है।आगे उन्होंने प्रस्तुतिकरण के माध्यम से बढ़ती हुई ऊर्जा के खपत का तुलनात्मक तथ्य विकसित तथा विकासशील देशों के संदर्भ में प्रस्तुत किए।

Per capita energy demand (प्रति व्यक्ति ऊर्जा की आवश्यकता) विकसित देशों में कम है क्योंकि उनकी आज की माँगें कई ज्यादा है लेकिन विकासशील देशों में per capita enrgy demond (प्रति व्यक्ति ऊर्जा की आवश्यकता) बढ़ती जा रही है जैसे भारत, चीन, व रूस क्योंकि यहाँ जनसंख्या बढ़ती जा रही है वर्तमान में ग्लोबल ऊर्जा की माँग ज्यादा है एवं वो कैसे व किस कीमत पर मिलेंगी ये एक महत्वपूर्ण तथ्य है। अगर अंतर्राष्ट्रीय एनर्जी आऊटलुक 2004 के वर्ल्ड मार्केटेड एनर्जी consumption (उपयोग) देखें तो औद्योगिक देशों का हिस्सा 45 प्रतिशत तक हो सकता है एवं विकासशील देशों का हिस्सा 2025 तक भी लगभग 45 प्रतिशत होगा। बाजार में हमारी क्या स्थिति होगी यह बाजार की सक्रियता हमें बताएगी। दुनिया की जो कुल ग्लोबल ऊर्जा की माँग है वो आज की तारीख से 2030 में 45 प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है और

यह निरंतर बढ़ने वाली प्रक्रिया है जिसमें कोयला ने सबसे ज्यादा स्थान काबिज किया है और आगे भी यह सबसे ज्यादा स्थान काबिज करेगा। कीमतों की अगर बात करें तो वो भी निरंतर बढ़ती जाएगी। ऊर्जा के विभिन्न माध्यमों का उपयोग जैसे–जैसे बढ़ता जाएगा वैसे–वैसे बिजली का उपयोग भी बढ़ता जाएगा।

कुल ऊर्जा की खपत में बिजली की खपत की मात्रा बढ़ती जा रही है। उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को बताया–

1. ऊर्जा की तीव्रता बहुत सारे देशों की per capita ऊर्जा की आवश्यकता (demand) को बढ़ावा देगी।
2. जीवाश्म ऊर्जा की निरंतर बढ़ती माँग मौसमी बदलाव को प्रभावित करेंगें।
3. तेलों के दाम निरंतर बढ़ते जाएगें।
4. बिजली की खपत निरंतर बढ़ती जाएगी।

उन्होंने आगे कहा कि पूरी प्राथमिक ऊर्जा का एक तिहाई भाग जो हम बाहर से मँगवाते है, वह 2030–32 तक बढ़ कर दो तिहाई हो जाएगी और ऊर्जा आयात अर्थव्यवस्था से भी जयादा गति से बढ़ेगा। कोयला की वृद्धि दर बढ़कर 10 प्रतिशत तक हो जाएगी। 2030–32 तक हमें लगभग 60 प्रतिशत प्राथमिक ऊर्जा के आयात की आवश्यकता पड़ेगी।

आगे उन्होंने इन सब समस्याओं के समाधान के उपाय सुझाते हुए कहा कि– हमें घरेलू ऊर्जा के उत्पादन को बढ़ाना होगा। नवीनीकरण ऊर्जा तथा नाभकीय ऊर्जा के स्त्रोंतो की ओर अत्यधिक ध्यान आकर्षित करना होगा जिससे हम प्राथमिक ऊर्जा के आयात को कम कर सके और अधिक कार्बन उत्सर्जन करने वाले ऊर्जा के स्त्रोंतों का उपयोग कम किया जा सके।

उन्होंने आगे ऊर्जा की बढ़ती हुई खपत का कारण विकाशशील देशों में बढ़ती हुई जनसंख्या को बताया और ऊर्जा के खपत की मात्रा का संबंध वर्तमान में लोंगों द्वारा अधिक मात्रा में उपयोग किए जा रहे बिजली के खपत से संबंध स्थापित करते हुए कहा कि हमें घरेलू उत्पादन, नवीनीकरण ऊर्जा एवं नाभकीय ऊर्जा के रूपांतरण को बढ़ावा देना चाहिए जिसके परिणामस्वरूप हम विकासशील देशों में वर्तमान में विद्यमान ऊर्जा के संकट को रोकने में सफल हो सकें।

## सांस्कृतिक कार्यक्रमः "छत्तीसगढ़ दर्शन"

**Cultural Programme "Chhattisgarh Darshan"**
**By Children of Ramakrishna Mission Ashram, Narayanpur**

**रामकृष्ण मिशन आश्रम, नारायणपुर के छात्रों के द्वारा**

**4.12.2013**

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर में 1 मई 2013 से 1 मई 2014 तक विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है और विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम की इसी कड़ी में एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवसिर्टी तथा रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में दिनाँक दिसम्बर 4–5, 2013 को सेंट्रल जोन वाइस चान्सलर मीट 2013–14 का आयोजन किया गया। जिसमें भारत के सेंट्रल जोन के कई विश्वविद्यालयों के कुलपति ने भाग लेकर देश के महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की शिक्षा प्रणाली पर परिचर्चा की। कार्यक्रम की इसी कड़ी में रामकृष्ण मिशन आश्रम, नारायणपुर के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति का आयोजन विश्वविद्यालय द्वारा किया गया, जिसमें आश्रम के बालक–बालिकाओं ने गीत तथा नृत्य के माध्यम से छत्तीसगढ़ प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर की मनमोहक झांकी प्रस्तुत की।

इस झांकी में छत्तीसगढ़ के प्राकृतिक सौन्दर्य को प्रकृति का मानवीकरण करते हुए छत्तीसगढ़ की भौगोलिक संरचनाओं को अरपा पैरी के धार..... नामक छत्तीसगढ़ी लोकगीत द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस लोकगीत के अनुसार छत्तीसगढ़ प्रदेश एक दुल्हन की तरह है, जिस तरह एक दुल्हन के माथे पर बिंदियाँ उसकी सुंदरता को और बढ़ा देती है उसी प्रकार छत्तीसगढ़ के पर्वत और घाटियाँ बिंदियाँ की भाँति शोभायमान है। छत्तीसगढ़ के 27 जिलें उसकी अंग के समान प्रतीत होते हैं, जिसमें सरगुजा और रायगढ़ बाँह, रायपुर कमर और राजनाँदगाँव कमर में शोभायमान कमरबंध की तरह प्रतीत होते हैं। छत्तीसगढ़ के राजकीय पक्षी पहाड़ी मैना की बोली छत्तीसगढ़ की बोली की भाँति मिठास लिये हुये है। छत्तीसगढ़ प्रदेश के लहलहाते वन इसकी साड़ी के समान है। कार्यक्रम का संचालन तथा निर्देशन संस्था की निर्देशिका डॉ. संगीता तिवारी ने किया। इसके अलावा छत्तीसगढ़ के तीज त्यौहारों का प्रस्तुतिकरण संस्था के बच्चों द्वारा लोकगीतों लोकनृत्य के माध्यम से किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी सुधीजनों ने इस मनमोहक झाँकियों का भरपूर आनंद लिया।

## स्वर्ण जयंती व्याख्यान

# न्यायमूर्ति श्री ए. के. पटनायक

## DIVISION AND DECENTRALIZATION OF POWERS UNDER THE INDIAN CONSTITUTION

14 दिसम्बर, 2013

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में स्वर्ण जयंती व्याख्यान माला के अन्तर्गत दिनांक 14 दिसम्बर, 2013 पूर्वान्ह 11:30 बजे भारत के उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री ए. के. पटनायक के व्याख्यान का आयोजन किया गया। न्यायमूर्ति श्री ए. के. पटनायक **''भारतीय संविधान के अंतर्गत सत्ता का विकेन्द्रीकरण'' (DIVISION AND DECENTRALIZATION OF POWERS UNDER THE INDIAN CONSTITUTION)** विषय पर व्याख्यान दिया।

न्यायमूर्ति श्री ए. के. पटनायक ने राजकुमार कॉलेज, रायपुर से स्कूली शिक्षा प्राप्त कर दिल्ली विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में आनर्स डिग्री प्राप्त करने के उपरांत मधुसूदन विधि महाविद्यालय, कटक से लॉ की डिग्री हासिल की।

उड़ीसा से विधि विशेषज्ञ के रूप में अपना सफर प्रारंभ करते हुए उड़ीसा, असम, छत्तीसगढ़ व मध्यप्रदेश के न्यायालयों में विभिन्न उच्च पदों को सुशोभित किया। छत्तीसगढ़ में 14–03–2005 वे मुख्य न्यायाधीश बनें एवं 17–11–2009 से वे उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीश नियुक्त हुए।

उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आधुनिक युग में उदारीकरण के दौर में आमजनता की शासन एवं प्रशासन में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए सत्ता का

विकेंद्रीकरण नितांत आवश्यक है। भारत के संविधान में इस हेतु पर्याप्त प्रावधान बनाए गए है और 1993 में किए गए संशोधन के अनुसार अब त्रिस्तरीय पंचायत को संवैधानिक दर्जा दिया गया है परंतु देश के कई राज्यों एवं प्रांतो में आम जनता को विकास में भागीदारी सुनिश्चित करने की राह में कई कठिनाईयॉ उत्तपन्न हो रही है। प्रजातांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ एवं कारगार नही बनाया जा सकता जब तक आम जनता की सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित नहीं की गई हो। संविधान की मंशा के अनुरूप सत्ता के केन्द्रीकरण से विकेन्द्रीकरण की ओर ले जाने के लिए पर्याप्त एवं मजबूत ढॉचात्मक संरचना एवं व्यवस्था की आवश्यकता है। सत्ता के केन्द्रीकरण से कई समस्याऍ जैसे जात, धर्म, लिंग भेद आदि का निराकरण भी संभव हो सकेगा और साथ ही साथ सर्वांगीण विकास संभव होगा। व्याख्यान के उपरांत छात्रों एव शिक्षकों से परस्पर संवाद भी हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शिव कुमार पाण्डेय ने की।

**Golden Jubilee Lecture**
**on**

# IN SEARCH OF THE DRIVERS: EXCAVATING CANCER GENOMES

**by**
**Prof. Partha P. Majumder**
**Director**
**National Institute of Biomedical Genomics, Kalyani (W.B.)**
**27-12-2014**

Cancer is a genetic disease. For any type of cancer – lung cancer, oral cancer, cervical cancer, etc. – only rarely does one encounter families in which multiple family members are affected with cancer. In other words, familial cancers are rare. Cancer is mostly sporadic. The hallmark of cancer is uncontrolled growth of cells. One of more DNA alterations in a normal cell leads to a growth advantage of the cell, which then grows uncontrollably and abnormally to form a set of cells, called a clone, which forms a tumour. These DNA alterations are mostly somatic. Many genes and germ-line alterations in these genes that cause cancer have been known for at least three decades. However, genes which acquire somatic alterations and those alterations, called *driver* mutations, that provide the cell with a growth advantage and hence likely associated with cancer, have not been systematically catalogued. The International Cancer Genome Consortium [**International network of cancer genome projects.** *Nature* 464, 993-998 (15 April 2010)] formed to systematically identify the landscapes of mutations in various types of cancer was formed in 2009. India is a member of this Consortium. The first set of results of this Consortium has generated mutational landscapes of cancer genomes. Prof. P.P. Majumdar discussed in datail an overview of these landscapes and the lessons learned

# विश्वविद्यालय कुल–गीत का विमोचन

## 13.01.2014

पं. रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर में दिनाँक 13.01.2014 को विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती के अवसर पर 13–15 जनवरी 2013 तक ''फिलॉस्फी ऑफ नागार्जुन'' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि नोबल पुरस्कार से सम्मानित दलाई लामा, प्रो. नागवांग सामतेन, कुलपति, केन्द्रीय विश्वविद्यालय तिब्बतन अध्ययन सारनाथ, डॉ. रमन सिंह मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ शासन, कुलपति प्रो. एस.के. पाण्डेय, कुलसचिव के.के. चन्द्राकर तथा डॉ. दिनेश नंदिनी परिहार, प्रो. मिताश्री मित्रा एवं प्रो. प्रोमिला सिंह व विश्वविद्यालय परिवार के अन्य सदस्यगण उपस्थित थे।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुल गीत का विमोचन **डॉ. रमन सिंह**, मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ शासन के कर कमलों से हुआ। कुल गीत के गीतकार **डॉ. जीवन यदु ''राही''** खैरागढ़ हैं। कुल गीत के स्वर का संयोजन **डॉ. श्रीमती सुनीता भाले** द्वारा किया गया है।

इसके संगतकार श्री मयूर शर्मा, श्री जयप्रकाश साहू, श्री कमलेश शर्मा, श्री मनोज जायसवाल, श्री अमरदीप लकड़ा, श्री रंजन बुद्धिका, श्री शंकर दर्रो, श्री अतुल मिश्र, श्री केशव सिंह, कु. श्वेता इंदूरकर, कु. जागृति प्रधान, कु. प्रेरणा प्रधान तथा कु. मेधा शर्मा खैरागढ़ हैं। कुल गीत के बोल **''सत्य–शिव–सुन्दर..... चेतना का स्वर बने''** है **जो राग मिश्र मांड** पर आधारित है।

# कुल–गीत

सत्य–शिव–सुन्दर से अभिमंत्रित सुहावन

ज्ञान का विज्ञान का यह तीर्थ पावन

विश्व भर की चेतना का स्वर बने।

पावनी चित्रोत्पला – सिंचित धरा पर –

कृषि – खनिज – वन संपदा का उन्नयन कर –

यह नवल इतिहास का यश–धर बने ।

विश्व भर की चेतना का स्वर बने ।

शोध नित विज्ञान का हर पक्ष सत्वर –

डालता गंतव्य में नव नींव – प्रस्तर ,

नव्य शोधित ज्ञान जन–हितकर बने ।

विश्व भर की चेतना का स्वर बने ।

सांस्कृतिक शुभ संपदा – संयुत तमोहर –

चल रहा पथ पर प्रगति के यह निरंतर ,

विश्व की रजनी में यह दिनकर बने ।

विश्व भर की चेतना का स्वर बने ।

# कुलगीत का भावार्थ

**पं. जीवन यदु**
**गीतिका,दाऊ चौरा, खैरागढ़**

0––––– भारतीय मनीषा ने जिस महान सत्य की खोज की, वह – 'सत्यं शिवं –सुन्दरं'। इस विश्व विद्यालय का लक्ष्य भी यही है। विश्व–विद्यालय का विश्वास है कि जो सत्य है, वही मंगलकारी है और जो मंगलकारी है, वही सुंदर है। इसीलिए यह विश्व–विद्यालय शोभन है, सुहावन है। यह ज्ञान और विज्ञान का पवित्र तीर्थ–स्थल है। इस कुलगीत में जन–भावना है कि यह विश्व–विद्यालय–सम्पूर्ण विश्व की चेतना का स्वर बने। अर्थात् सम्पूर्ण विश्व की चेतना को सत्य–शिव और सुंदर की ओर प्रेरित करने वाला बने।
0––––– सत्य पर आधारित मंगलकारी सुन्दरता की प्राप्ति हेतु और ज्ञान–विज्ञान के प्रति जिज्ञासु छात्रों को प्रदान करने के लिए पवित्र महानदी (चित्रोत्पला) द्वारा सिंचित धरती पर यह विश्वविद्यालय अवस्थित है। यह विश्व–विद्यालय अपने छात्रों के माध्यम से कृषि, खनिज और वन आदि क्षेत्रों को समुन्नत करके तथा संपदाओं में वृद्धि करके इतिहास में यश का भागी बने।

0––––– विज्ञान के अनेक रूप हैं और प्रत्येक रूप के अनेक पक्ष हैं। यह विश्व–विद्यालय विज्ञान के सभी रूपों के सभी पक्षों में शीघ्रता से शोध करके अपने गंतव्य के लिये ऐसे नवीन नीवें भर रहा है, जिस पर विकसित–विज्ञान का भवन भविष्य में खड़ा हो सके। साथ ही, वह यह भी चाहता है कि नवीन शोधित ज्ञान समाज–हितकारी हो।

0––––– यह विश्व–विद्यालय अज्ञानता के अंधकार को हरने वाला है यह संस्कृति की शुभ–संपदा से युक्त है। अतः यह निरंतर प्रगति के मार्ग पर बढ़ रहा है। विश्व पर अपसंस्कृति की घनी कालिमा छा रही है। जन–भावना है कि एंसे समय में यह विश्व–विद्यालय सूर्य की भॉति सत्य–शिव–सुन्दर का, जन हितकारी ज्ञान–विज्ञान का और सुसंस्कृति का प्रकाश फैलाए।

**कुलगीत के लेखक** – डॉ. जीवन यदु 'राही',खैरागढ़

**कुलगीत का स्वर संयोजन** – डॉ. श्रीमती सुनीता भाले, खैरागढ़

**सहयोग** – श्री मयूर शर्मा, श्री जयप्रकाश साहू, श्री कमलेश शर्मा, श्री मनोज जायसवाल, श्री अमरदीप लकड़ा, श्री रंजन बुद्धिका, श्री शंकर दरों, श्री अतुल मिश्र, श्री केशव सिंह, कु. श्वेता इंदूरकर कु. जागृति प्रधान, कुकृ प्रेरणा प्रधान तथा कु. मेधा शर्मा।

## शास्त्रीय–नृत्य ओडिसी का सुश्री पुर्णोश्री राउत, श्री लक्की मोहंती एवं साथियों द्वारा प्रस्तुति

**27.01.2014**

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर में विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अध्ययन एवं शोध अनुसंधानशाला के द्वारा पाँच दिवसीय स्वर्ण जयंती अंतरविषयी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनाँक 27.01.2014 से

31.01.2014 तक किया गया।

इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. के.के. चक्रवर्ती अध्यक्ष, ललित कला अकादमी नई दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि प्रो. एस.एन. रथ डीन, सोशल साइन्स, महात्मा गाँधी नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च एंड सोशल एक्शन हैदराबाद, प्रो. डी.के. मरोठिया प्रेसीडेन्ट, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ईकोलॉजी नई दिल्ली एवं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस.के. पाण्डेय, कुलसचिव के.के. चन्द्राकर उपस्थित रहे।

इस अवसर पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन कन्वीनर प्रो. मिताश्री मित्रा द्वारा किया गया। इसमें सुप्रसिद्ध ओडिशी नृत्यांगना सुश्री पुर्णोश्री राउत तथा नर्तक श्री लक्की मोहंती एवं उनके साथियों द्वारा ओडिशी नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी गई। नृत्य का केन्द्र बिन्दु श्री कृष्ण के रासलीलाओं पर आधारित था। इस गरिमामय कार्यक्रम का आनंद अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश–विदेश से आए प्रतिभागियों ने भी उठाया। कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस.के. पाण्डेय द्वारा कलाकारों का श्रीफल और सॉल भेंट कर सम्मान किया गया।

January 27-31, 2014




January 27-31, 2014

January 27-31, 2014

Issues, Challenges and Perspectives
January 27-31, 2014

GOLDEN JUBILEE INTERNATIONAL SEMINAR
on
Integrated Natural Resources Management
Issues, Challenges and Perspectives
January 27-31, 2014
Organized by : School of Regional Studies and Research, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.)
In Association with : Council for Tribal & Rural Development, Bhubaneshwar
GOLDEN JUBILEE CELEBRATION

# Lecture and Prize Distribution to the students of Leadership, Team Building & Adventure Course for Youth

**by**

**Smt. Santosh Yadav, Padmashree (Twice Everest Summiteere and Leader)**
**Director, Everest Fondation, New Delhi**

**29-03-2014**

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर की स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर माननीय कुलपति महोदय द्वारा विभिन्न विभागों के 100 छात्र–छात्राओं की टीम समूह को एवरेस्ट फाउन्डेशन द्वारा आयोजित कार्यशाला में सम्मिलित होने का अवसर प्रदान किया।

दिनाँक 29.03.2014 को समय पूर्वान्ह 11.30 बजे डॉ. सी.वी. रमन हॉल में एवरेस्ट फाउन्डेशन द्वारा आयोजित कार्यशाला में सम्मिलित छात्र–छात्राओं को प्रमाण पत्र वितरित करने का समारोह आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पद्मश्री श्रीमती संतोष यादव उपस्थित थी जो कि विश्वविख्यात दो बार एवरेस्ट चढ़ने का खिताब अपने नाम किया है इसके साथ इस आयोजन में पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के कुलपति प्रो. एस.के. पाण्डेय, प्रो. रीता वेणुगोपाल, प्रो. मिताश्री मित्रा, प्रो. राजीव चौधरी प्रमाण पत्र वितरण समारोह में उपस्थित थे।

सर्वप्रथम एवरेस्ट फाउन्डेशन की संचालन पद्मश्री संतोष यादव एवं अन्य अतिथि का पुष्प गुच्छों के साथ स्वागत किया गया इसके पश्चात् श्रीमती संतोष यादव द्वारा सभी छात्र–छात्राओं को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए उनका उत्साह वर्धन भी किया।

पद्मश्री संतोष यादव द्वारा अपने व्याख्यान में मनाली टूर में गये बच्चों के बारे में चर्चा की, साथ ही साथ उन्होंने अपने व्याख्यान में बच्चों को भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से विभूषित करने का भी प्रयत्न किया तथा बच्चों को बधाई भी दी।

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के कुलपति माननीय प्रो. एस.के. पाण्डेय द्वारा सभी बच्चों को बधाई दी तथा बच्चों का उत्साह वर्धन व सराहना भी की गई।

प्रो. रीता वेणुगोपाल द्वारा मनाली टूर में गये बच्चों की विशेष रूप तारीफ की गई इसके साथ ही लड़कियों द्वारा जितनी भी गतिविधियां की गई उसकी प्रशंसा की साथ ही साथ उन्होंने पद्मश्री संतोष यादव और कुलपति जी का धन्यवाद किया तथा इस प्रकार के आयोजन को पुनः आयोजित करने का सुझाव भी दिया। साथ ही प्रो. रीता वेणुगोपाल द्वारा बच्चों के शारीरिक गतिविधि एवं संस्कृति के महत्व के बारे में चर्चा की।

कार्यक्रम के अंत में नेटबॉल विजेता छात्र–छात्राओं को पुरस्कार वितरित किया गया।

# स्वर्ण जयंती स्थापना दिवस समारोह

## 01 मई, 2014

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर में दिनाँक 01.05.2014 को विश्वविद्यालय का स्वर्ण जयंती स्थापना दिवस समारोह मनाया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. श्रीकुमार बैनर्जी, परमाणु ऊर्जा विभाग, होमी भाभा चेयर प्रोफेसर, भाभा परमाणु, अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई एवं पूर्व अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग भारत सरकार, नई दिल्ली थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता छत्तीसगढ़ प्रदेश के राज्यपाल माननीय श्री शेखर दत्त ने की। विशिष्ट अतिथि प्रो. एस.एम. अग्रवाल, पूर्व कुलपति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,, रायपुर थे। प्रो. शिवकुमार पाण्डेय कुलपति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर एवं कुलसचिव श्री के.के. चन्द्राकर मंच पर उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया और विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं द्वारा विश्वविद्यालय के कुलगीत की मनमोहक प्रस्तुति दी गई। कुलगीत का गायन अनुराधा चटर्जी, अमृता ताल्लुकदार, जी. तेजस्वी, महेन्द्र कुमार, मालवीका खिलारी, ओमन लाल सिन्हा, पूजा बंजारे, रमेश कुमार एवं ताजीन्दर कौर के द्वारा समूह में किया गया। इसके पश्चात् माननीय कुलपति के द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। माननीय राज्यपाल महोदय एवं मुख्य अतिथि महोदय ने विश्वविद्यालय के माननीय पूर्व कुलपति, पूर्व कुलाधिसचिव, पूर्व कुलसचिवों एवं 1 मई 2013 से 1 मई 2014 के बीच सेवानिवृत्त हुए शिक्षकों एवं कर्मचारियों का शॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया। विश्वविद्यालय की स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर केन्द्रीय डाक विभाग के द्वारा विश्वविद्यालय की स्वर्ण जयंती पर विशेष आवरण का विरूपण किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा प्रसारित अर्द्धवार्षिक समाचार बुलेटिन ''चित्रोत्पला'' का विमोचन एवं साथ ही विश्वविद्यालय के जर्नल, जर्नल ऑफ पं. रविशंकर यूनिवर्सिटी, पार्ट – बी (साइंस) के विशेष अंक का विमोचन भी इस अवसर पर किया गया। सत्र 2013 तक स्वर्ण पदक के लिए चयनित छात्र–छात्राओं को स्वर्ण पदक का वितरण भी इस अवसर पर किया गया।

सर्वोच्य स्थान प्राप्त विश्वविद्यालय की जैविकी अध्ययनशाला को डॉ. बाबू राम सक्सेना स्मृति रंनिंग ट्रॉफी प्रदान की गई। सर्वोत्तम वार्षिक

प्रदर्शन में सर्वोच्च स्थान प्राप्त अशासकीय महाविद्यालय को डॉ. बी.एल. पांडे स्मृति रनिंग ट्रॉफी प्रदान की गई। इसी क्रम में आगे NAAC में A ग्रेड प्राप्त शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर महाविद्यालय, दुर्ग को कुलपति ट्राफी प्रदान की गई।

राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत सत्र 2011–2012 में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत कार्यक्रम अधिकारी, महिला ईकाई – डॉ. मालती तिवारी, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महासमुंद एवं सत्र 2012–2013 में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत स्वंय सेवक – श्री कांतिलाल यादव, बी.ए.–3, शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव का शॉल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मान कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथियों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. श्रीकुमार बैनर्जी, परमाणु ऊर्जा विभाग, होमी भाभा चेयर प्रोफेसर, भाभा परमाणु, अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई एवं पूर्व अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग भारत सरकार, नई दिल्ली का व्याख्यान प्रमुख आकर्षण का केन्द्र रहा। डॉ. श्रीकुमार बैनर्जी ने अपना व्याख्यान **'विज्ञान एवं समावेशी विकास'** (Science and Inclusive Growth) पर दिया।

अपने व्याख्यान में उन्होंने समावेशी विकास के विभिन्न तत्वों की पहचान करने का प्रयास किया है। विज्ञान एवं तकनीकी आर्थिक विकास के लिए कैसे उत्प्रेरक हो सकते है, जिसके फायदे/लाभ समस्त नागरिकों तक पहुंचे, इस पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। अविष्कार एवं नवपरिवर्तन के सुविस्तार के मध्य संबंधों की कड़ी/श्रृखंला का उन्होंनें कुछ उदाहरणों के उन्होंनें द्वारा प्रस्तुतिकरण

किया। कृषि एवं श्वेत क्रांति के क्षेत्र में वैज्ञानिक हस्तक्षेप समावेशी विकास के महत्वपूर्ण उदाहरण है। देश के कुछ प्रमुख सेक्टरों की आत्मनिर्भरता भी सफल वैज्ञानिक कोशिशों का परिणाम है।

वृहत रूप से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अन्य अनेक क्षेत्रों के विकास में योगदान दे सकते हैं, विशेष रूप से सामाजिक क्षेत्रों में, जिसमें अभी तक सार्थक प्रगति नहीं हुई है। उदाहरण के लिए कृषि–क्षेत्र एवं भोज्य पदार्थों के संरक्षण में विकिरण तकनीक की उपयोगिता, स्वास्थ्य देखभाल, शहरी एवं ग्रामीण कूड़ा–प्रबंधन, जल पुनर्भरण में आइसोटोप की उपयोगिता, नाभकीय विनवनीकरण इत्यादि आण्विक ऊर्जा के ऐसे उदारहण हैं जो सामाजिक विकास से संबंधित है। राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क (National Knowledge Network) के भावी दृष्टिकरण से शिक्षा के प्रसार में सार्थक भूमिका एवं दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में वैज्ञानिक शोधों की प्रगति की पहुंच (का अभिगम) संभव हुई है। इन सभी तत्वों की विस्तार से प्रो. बैनर्जी ने अपने वक्तव्य में उल्लेख किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए माननीय राज्यपाल महोदय ने स्वर्ण जयंती की बधाई देते हुए विश्वविद्यालय के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए आशीर्वचन दिया। कुलपति महोदय ने सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किया।

स्वर्ण जयंती स्थापना दिवस समारोह में सेवानिवृत्त शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारियों को स्मृति चिन्ह वितरित किया गया।

कार्यक्रम की अंतिम कड़ी में छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक पड़ाव ''लोक–धरोहर'' सांस्कृतिक संस्था, अहिवारा नंदिनी जिला दुर्ग द्वारा छत्तीसगढ़ के पारंपरिक लोकगीत और

लोकनृत्यों का मनमोहक प्रस्तुतिकरण किया गया, जिसमें छत्तीसगढ़ की नाचा शैली, ददरिया, सुवा गीत, राउत नाचा, बांसगीत, पंथी, करमा, रिलो तथा होली आदि प्रमुख आकर्षण का केन्द्र रहे।

कार्यक्रम का निर्देशन श्री लीलाधर साहू, सह–निर्देशन राजेन्द्र साहू, गायन/हारमोनियम में श्री सूर्या साहू, बांसुरी वादन श्री सफीन दास बेन्जो वादन श्री मंशा बंजारे तबला वादन श्री सुकृत कुमार साहू तथा सहयोगी के रूप में आरती बारले, निशा ठाकुर, रानू सोनवानी, दुलारी निषाद, माधुरी सार्वा, लेखराम साहू, टिवलेन्द्र साहू, दुर्गा मांडले, शेखर टंडन आदि द्वारा किया गया। कलाकारों का प्रोत्साहन वर्धन करते हुए कुलसचिव महोदय ने पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया।

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
स्वर्ण जयंती स्थापना दिवस समारोह
01 मई 2014

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
स्वर्ण जयंती स्थापना दिवस समारोह
01 मई 2014

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपु

**Golden Jubilee Lecture by**

# Padma Bhushan Shri B. Muthuraman

**Vice Chairman, Tata Steel**

**On**

# Learnings from Life

**August 27, 2014**

Honorable Governor Shri Shekhar Dutt, Prof. Pandey, Prof. Mitra, other guests and students sitting here, Honorable Shri Shekhar Dutt, whom I had know from many years and for whom I have great deal of respect and regards. I also want to tell you that I came here not only because Professor S.K. Pandey invited me but more by the magnetism of Shri Shekhar Dutt because he always insisted me to come here and I have actually failed to fulfill promises I made to him. So Shekhar Dutt ji its being great to be see you here. Prof. Pandey, Prof. Mitra, distinguished guests and invited present here to this great University, you know I am visiting Raipur after 5-6 years or even longer than that and during my brief stay since last 4 -5 hrs., I can see the changes happened in this town. A new Raipur has been built, which I am hoping to see after this event is over and I am going to drive town and see the development. I do see more industrialization and I am quite sure the base for industrialization has been set up in this State for last few years. More and more industries will come here, more and more employment generation will take place and more and more School, Colleges will established here because this State for the last few years has been known for its very good governance and administration. The moment you have good governance and administration, I am sure things will really happened well here. I am very happy to addressing you people during completion of your Universities 50$^{th}$ year.

I heard about University though I know very few things. Last night I heard many things from Prof. Pandey. In fact, Pt. Ravishankar Shukla's Grand son-in-law used to be there one of my colleague in Tata Steel few years ago. Couple of days back I spoke to him. He told me little bit about the history of this institute. You have a historic institute, you respond many colleges, You have done great work, You have wonderful campus and I am sure the atmosphere here is quite convincing for studies also. Another reason is that I am currently fond of talking to students and sharing my mind with students, I know current year students might not agree with what one is saying that is why interesting conversations should take place between the current year student and people like me who loose student life some 50 years ago. So, it is a great pleasure to talking to students and I Love being with students and I do this

type of programme that includes talking to students in all over India. When Prof. Pandey ask me few days back regarding what will be the subject of my talk? I really could not think anything better than talking about lessons from life or learning from life because learning do not takes place only in schools and colleges, in fact more learning is takes place outside the campus of school and colleges. In your life, it you are good observer and careful enough to reflect what is happening in the world, you can learn lots of things.

Over the last 60 years of my life, I spent 48 years in corporate world, for one company Tata Steel, which is very great institution and I have learnt lots of things from there and today I thought to share some with you. Thus may be some important 5-6 points, some of may be useful to you and some are not. If they are not useful to you then you should tell me during question answer sessions, we will debate on the subject.

The first lesson, I wanted to start with, is some personal experiences before I joined Tata Steel. I passed Metallurgical Engineering from IIT Madras in 1966. Just about month or two before I actually passed out, I had two offers on my hand, one of the offer to as from Tata Steel for a graduate trainee, they had come to the department for campus recruitment and I was fortunate to get recruited by Tata Steel and they offered me a job with salary of Rs. 400/- per month as a trainee. As I was a good student, I also got admission in overseas University of America-California Institute of Technology (Cal Tech) for Master of Science Course in Material Science, which is subject of my passion. In that year for M.Sc., they offered me 400 dollars a month which is good sum of money in those years and as I belong to a middle class family, I want money to support my sister, my brothers, so I had a great temptation for getting admitted in Cal Tech. In my mind I thought making choice between Rs. 400/- and 400 dollars is actually very simple choice but I was little worried whether I had chosen the right one? So I went to my Professor, I always be very fond of him. he was Head of the Department of Metallurgy those days. he is still alive and on whose honor I had gave a lecture at IIT Madras two months ago. Prof. E.G. Ramachandran is a very well known Metallurgist of India. I went to him for advice and he told me that look Muthuraman you can always go abroad, I have no doubt in that but don't miss an opportunity to join a company like Tata Steel. Tata's are a great organization, it will be inconsonance with your own personal ethics and you have a big good match with your own personal ethics and of Tata Steel Company. I have known this company for a long time, you should go and enjoy. Don't worry about the salary, salary is the least thing you should not worried about the money you will get to start your career. This is something which I will always remember in life. So after my brief conversation with him I decided to say no to CalTech

University and being in Tata Steel, now for 48 years. This is my 48th year in Tata Steel and I have never ever regretted to my decision. All things that glitter is not gold and students should choose the career on the basis of the organization they are going to work and not on the basis of salary the firm is going to pay. Salary should be the least the criteria for taking the decision. You may start with higher salary but cannot enhance your further growth. Life is long you are going to have a long life career of may be 40 or 50 years and starting salary in lakhs is not a yard stick to measure a students career. So please careful about how you choose your career. The second thing I want to tell you, which I have learnt overtime being in the company, being in life watching people, observing people, reading books especially the beautiful book written by Shri Shekhar Dutt on Defence Analysis of India. When all of us go to school or colleges we gather knowledge. The curriculum we have in India have a great degree of imparting knowledge making people capable of passing examinations entrances etc, but please remember that to succeed in life, knowledge is only part. If you ask me I would put knowledge as 30% of a persons total capability. There are some more requirements to succeed in life. For example hunger to perform, the hunger to deliver good results, the hunger to take our performance or company to higher level, how to handle disappointment as you have several disappointments in life, how to have very high energy level all the time this constitute 70%of a persons personality. Where are being such things taught? They are not taught in schools or colleges but we are living in a chance that in life we will somehow get this characteristic and many of us do not get this chance. I have seen that many of these characteristics are maintained by our brain. As we know that we have left brain and right brain. What school and colleges taught us is full of left brain. You may have great knowledge but you need to achieve something in order to become something. Therefore, these characteristics come from many different aspects of life apart from school and colleges.

Some of them are participating in sports, learning music, reflecting oneself doing yoga, spending time with oneself. In fact, I remember a programme that I had attended in Pune in 1989 conducted by a Institute called National Institute of Advanced Studies (NIAS). The first programme of this NIAS was in 1989 and this NIAS has a history. Many years ago, Mr. JRD Tata, when he was Chairman of the Tata group thought that we are producing leaders that can use the right brain to achieve what others cannot. You need a content of the right brain to achieve concepts that you are learning. JRD Tata want to design a programme and he said Tata will bare 50% cost of such an intensive programme. He approached the Prime Minister from time to time but nobody responsded. It was Mr. Rajiv Gandhi who heard it, then decided to establish the Government –Tata Initiative called NIAS. I was in the first batch of people. They had taken 12 IAS from Central Government and taken 12 industry people together and the subjects they

taught were Philosophy, Sociology, Interpretation of History, Freedom movements taught by Dr. Saravapalli Radhakrishan's son Dr. Saravapalli Gopal. We listen music of all kind. You may ask yourself that are you spending sufficient time to yourself. Therefore, we need to develop self introspection to achieve something in life. So, please pay attention to all this to achieve not only a promotion or post but to realize that what we have learnt from life will help us to become a good person and a good citizen of our country.

…….

# ‘सुपथा’
# ‘The Right Way’

(Script of Documentary Film on Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.))

प्रो. मिताश्री मित्रा

ज्ञान–विज्ञान की भारतीय परंपरा का इतिहास अत्यंत गौरवशाली है। यह उदात्त परंपरा वर्तमान तक अक्षुण्य रही है। नवोदित छत्तीसगढ़ राज्य का इतिहास भी अत्यंत प्राचीन एवं वैभवशाली है। यहॉ समन्वय, सद्भाव एवं संस्कारों के साथ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का अद्भुत समन्वय हमें विरासत में प्राप्त हुआ है। अरण्य संस्कृतियां यहॉ शताब्दियों से साथ–साथ फल–फूल रही है। उन्हीं आदर्शों को लेकर तथा नवीन ज्ञान–विज्ञान को समाहित कर सन् 1964 के ग्रीष्म ऋतु में पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय की स्थापना रायपुर में हुई।

पुराने एवं नये मध्यप्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं. रविशंकर शुक्ल छत्तीसगढ़ के मदन मोहन मालवीय थे। जिस प्रकार मालवीय जी ने सन् 1916 में हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी की स्थापना की, उन्हीं आदर्शों को लेकर पं. रविशंकर शुक्ल भी छत्तीसगढ़ में विश्वविद्यालय की स्थापना के स्वप्नदृष्टा थे, जो उनके स्वर्गारोहण के पश्चात् ‘‘रविशंकर विश्वविद्यालय’’ एवं पुनः नामित होकर ‘‘पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय’’ के रूप में मूर्तिमान हुआ। छत्तीसगढ़ के सर्वांगीण विकास, विशेष रूप से शैक्षणिक जागृति के उनके अथक भागीरथ प्रयासो को नमन करते हुए एवं जननायक की स्मृति को चिरस्थायी एवं अविस्मरणीय करने के लिए इस विश्वविद्यालय का नाम पं. रविशंकर शुक्ल से संबद्ध किया गया। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी, छत्तीसगढ़ राज्य के सबसे बड़े व पुराने विश्वविद्यालय की स्थापना म.प्र. अधिनियम 13, 1963 के अनुसार हुई एवं यह अधिनियम 01 मई 1964 से कार्यान्वित हुआ। इसके पूर्व यह सागर विश्वविद्यालय की सीमा के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र था। 02 जुलाई 1965 का दिन इस विश्वविद्यालय के इतिहास में महत्वपूर्ण है जब तत्कालीन सूचना प्रसारण मंत्री स्व. इन्दिरा गांधी ने पांच शिक्षण विभागों का विधिवत् उद्घाटन किया। उस समय कुल 46 महाविद्यालय इससे सम्बद्ध थे।

इस विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति विश्व प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ. बाबूराम सक्सेना हुए। उन्होंने जो उत्तम विद्या की ज्योति जलाई उसको अधिकाधिक प्रकाशपूर्ण बनाने के निमित्त बाद में आने वाले कुलपतियों में अविश्रांत कार्य किया तथा छत्तीसगढ़ जनमेदिनी की आशाओं और आकांक्षाओं को साकार करने में इन 50 वर्षों में आदर्श मानदण्ड स्थापित किये।

1 मई 2013 को यह वि.वि. अपने स्वर्ण जयंती वर्ष में प्रवेश कर चुका है, इन पचास वर्षों के सफर पर यदि हम दृष्टिपात करें तो इस वि.वि. ने हर क्षेत्र में निरंतर प्रगति के सोपानों को स्पर्श किया है। छ.ग. की संस्कारधानी राजधानी रायपुर के पश्चिम भाग में 1968 में 107 एकड़ भू–भाग से प्रारंभ इस वि.वि. का क्षेत्रफल वर्तमान में 277 एकड़ है, पॉच विषयों एवं विभागों से प्रारंभ हुए इस वि.वि. में अब 27 शैक्षणिक विभाग है। 1965 में 14552 विद्यार्थियों को लेकर आरंभ हुए इस वि.वि. में अब छात्रों की संख्या बढ़कर 224893 हो गई है। वर्तमान में 239 महाविद्यालय इससे संबद्ध है (88 शासकीय एवं 151 अशासकीय महाविद्यालय) । उल्लेखनीय है कि इस बीच इससे विलग होकर 1 जनवरी 1983 को गुरू घासीदास वि.वि., बिलासपुर एवं 2 सितम्बर 2008 को 23 महाविद्यालयों को लेकर बस्तर वि.वि., जगदलपुर की स्थापना हुई। साथ ही 30 अप्रैल 2005 में स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय, भिलाई एवं 2009 में आयुष एवं स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, रायपुर की स्थापना भी रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय से विलग होकर हुई। फलस्वरूप चिकित्सा संबंधी पाठ्यक्रम संचालित करने वाले 27 महाविद्यालय एवं तकनीकी पाठ्यक्रम संचालित करने वाले महाविद्यालय, जो पहले रविशंकर वि.वि. से संबंद्ध थे, वे स्वतंत्र विश्वविद्यालय के अधीन अस्तित्व में आ गये। बावजूद इसके छात्रों की संख्या में निरंतर वृद्धि इस बात का घोतक है कि यह राज्य में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक लोकप्रिय वि.वि. है। यहॉ न केवल छत्तीसगढ़ के सुदूर अंचलों से छात्र विर्द्याजन हेतु आते हैं वरन समीपवर्ती एवं दूरवर्ती राज्यों से जैसे – महाराष्ट्र, उड़ीसा, झारखड़, आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल, कश्मीर एवं अण्डमान–निकोबार द्वीपसमूह से भी छात्र ज्ञार्नाजन हेतु इस वि.वि. में दाखिला लेते हैं। राज्य के सबसे बड़े एवं पुराने वि.वि. के महत्व को स्वीकारते हुए 1967 में राज्य शासन से प्राप्त 1.50 लाख रू. का वार्षिक ब्लॉक अनुदान बढ़कर अब 24 करोड़ रू. हो गया है। विरासत में प्राप्त इस वि.वि. के चहुमुंखी विकास में वर्तमान में सक्रिय भूमिका निभा रहे है यहॉ के समर्पित ऊर्जावान एवं अपने–अपने विषयों में दक्ष 64 प्रोफेसर, 10 एसोसिएट प्रोफेसर एवं 40 असिस्टेंट प्रोफेसर तथा 11 प्रथम श्रेणी एवं 8 द्वितीय श्रेणी अधिकारी, 256 तृतीय श्रेणी एवं 174 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारीगण, जिनके कंधों पर प्रशासनिक व्यवस्था को संभालने एवं उसके निष्पादन का उत्तरदायित्व है।

## विश्वविद्यालय कुल चिन्ह (Mono)

छत्तीसगढ अंचल के पावन चित्रोत्पला सलिला के तट पर स्थित पावन भूमि राजिम नगरी के ऐतिहासिक राजीवलोचन मंदिर के संपूर्ण शिखर को विश्वविद्यालय के ''कुल चिन्ह'' (Mono) के रूप में लिया गया है, जो छत्तीसगढ़ (प्राचीन दक्षिण कोसल) की वैभवपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर एवं विद्या के उत्कृष्ट ज्ञान का प्रतीक है। इस विश्वविद्यालय की आदर्शोक्ति ऋग्वेद के अग्निसूक्त से ली गई है, यह उक्ति है– ''अग्ने

नय सुपथा राये'' अर्थात् ''हे अग्नि हमें अच्छे मार्ग से समृद्धि की ओर ले चलो''। यह स्वमेव विश्वविद्यालय के उत्कर्ष का द्योतक है।

विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक 50 वर्षों के सफर में यहॉ के छात्रों ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में नए क्षितिजों को छूने का प्रयास किया है। भारत ही नहीं अपितु विश्व के प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्रों में भी यहॉ के छात्रों ने कीर्ति–पताका फहराई है। शिक्षा स्वास्थ्य, विज्ञान, तकनीकी एवं प्रशासनिक क्षेत्रों के अतिरिक्त, क्रीड़ा, कला, नाट्य और संगीत के क्षेत्रों में भी इस विश्वविद्यालय के छात्रों का प्रदर्शन लाजवाब रहा है। इन युवाओं के पुरूषार्थ से नए भारत का सृजन अवश्यंभावी है।

## पं. सुन्दरलाल शर्मा ग्रंथालय

किसी भी शैक्षणिक संस्था का प्राण उसकी लाइब्रेरी मानी जाती है। अंचल के गौरव महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं बहुमुखी प्रतिभा संपन्न पं. सुन्दरलाल शर्मा की स्मृति में विश्वविद्यालय के ग्रंथालय का नामकरण ''पं. सुन्दरलाल शर्मा ग्रंथालय'' रखा गया।

विश्वविद्यालय में अध्ययन–अध्यापन और शोध के विकास में ग्रंथालय की केन्द्रीय भूमिका रही है। अंचल के सबसे बड़े ग्रंथालय में यू.जी.सी. के अनुदान से पुस्तकें व शोध पत्रिकाएँ (Journal) ली गई है। वहीं ''शोध–गंगा'' एवं ''शोध–त्रिवेणी'' से यू.जी.सी. नेटवर्क से एम.ओ.यू. (MOU) पर हस्ताक्षर कर इसका लाभ शोधार्थियों तक पहुचाने का प्रयास विश्वविद्यालय ने किया है। यह विश्वविद्यालय देश के उन चुनींदा विश्वविद्यालयों में से है जिसने राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की 1 GBPS गतिक्षमता वाली इंटरनेट की तेज रफ्तार दुनिया से कदम मिलाया है।

## शोध (Research)

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण और शोध दोनों एक दूसरे के पूरक है। विश्वविद्यालय की शैक्षिक उत्कृष्ठता हेतु गुणवत्तापूर्ण शोध और अनुसंधान आवश्यक है। विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों द्वारा माननीय कुलपतिजी के नेतृत्व में पहल कर इस ओर सार्थक प्रयास किया गया है फलस्वरूप विश्वविद्यालय में UGC-SAP, DRDO, DST, DST-FIST, UGC-MRP, CCOST, DBT, ISRO इत्यादि से शोध एवं अनुसंधान हेतु वित्तीय सहायता प्राप्त हुई है। इससे न केवल विभागों की अधोसंरचना का विकास हुआ है बल्कि यहॉ के छात्रों को उत्कृष्ट शोध–सुविधाएँ भी उपलब्ध हुई है। विदेशी शोधार्थी के लिए विशेष रूप से पुरातत्व के अध्ययन हेतु सिरपुर उत्खनन से प्राप्त अवशेष विशेष आकर्षक का केन्द्र है। वे अपने सुखद भविष्य की आशा से यहॉ शिक्षा लेने हेतु आकृष्ट होते हैं।

विज्ञान को प्रोत्साहन देने के साथ–साथ विश्वविद्यालय ने कला एवं साहित्य से संबंधित गतिविधियों को भी प्रोत्साहित किया। हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामधारी सिंह दिनकर, सुप्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. भगवत शरण उपाध्याय, सुप्रसिद्ध रंगकर्मी एवं नाटककार हबीब तनवीर, नेहरू पुरस्कार से संमानित सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री अमृत राय, डॉ. अशोक मिश्र इत्यादि का विशेष व्याख्यान देने हेतु विश्वविद्यालय परिसर में समय–समय पर आगमन हुआ। 1981–82 में स्थापित पं. सुन्दरलाल शर्मा, शोधपीठ के प्रथम मनोनीत अध्यक्ष श्री हबीब तनवीर हुए जिससे यह विश्वविद्यालय भी कला एवं संस्कृति के क्षेत्र के गौरवपूर्ण पथ की ओर बढ़ने हेतु दृढ़संकल्पित हुआ।

## Academic activities

अकादमिक उन्नयन में भी यह वि.वि. सदैव अग्रणी रहा है, अब तक 2300 छात्र पी–एच.डी की उपाधि से दीक्षित हो चुके है, छात्रों के प्रोत्साहन हेतु विभिन्न विषयों में प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त छात्र–छात्राओं को 63 वि.वि. स्वर्ण पदक तथा 86 दानदाता स्वर्ण पदक इस सत्र में प्रदान किए जाएगे। समय–समय पर इस वि.वि. के प्रागंण में कई राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध विद्वानों का आगमन हुआ है जिनके सारगर्भित प्रेरणादायी उद्‌बोधन एवं चर्चा से यहॉ के छात्र एवं शिक्षक लाभान्वित होते रहे है। ऐसे नामों की दीर्घ श्रृखंला में कुछ प्रमुख नाम है- पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न, डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम, पूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी बाजपेयी, पद्‌म विभूषण प्रो. जयंत नार्लीकर, श्री ए.एम. खुसरो, पूर्व सदस्य योजना आयोग, प्रो. रईस अहमद, यू.जी.सी. वाईस चेयरमेन, पद्‌म विभूषण डॉ. आर.जी. चिदंबरम्‌, पद्‌मभूषण डॉ. टी. रामासामी, पूर्व सचिव, डी.एस.टी., पद्‌मश्री डॉ. गोविंद स्वरूप, प्रो. वेदप्रकाश, यू.जी.सी. चेयरमेन, शांति नोबल पुरस्कार प्राप्त बौद्ध धर्म गुरू दलाई लामा, नोबल पुरस्कार प्राप्त प्रो. एच.डी. मॉल्ट रॉबर्ट ह्‌यूबर, पद्‌म विभूषण डॉ. अनिल काडोडकर, पद्‌म विभूषण प्रो. आर.ए. मार्शेलकर, पद्‌म विभूषण डॉ. आर. चिदंबरम, पद्‌म भूषण एस.एम. चित्रे सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री आर.सी. लाहोटी, श्री अरूण जेटली, डॉ. सैम पित्रोदा, इसरो के अध्यक्ष पद्‌म विभूषण डॉ. जी.माधवन नायर, प्रो. समीर ब्रह्‌नचारी डायरेक्टर जनरल सी.एस.आई. आर., उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्ति ए.के. पटनायक, न्यायाधीश सी.एस. धर्माधिकारी है, स्वर्ण जयंती वर्ष में विशेष रूप से विभिन्न अध्ययनशालाओं द्वारा 5 राष्ट्रीय कार्यशाला, 23 राष्ट्रीय संगोष्ठी, 2 अंर्तराष्ट्रीय संगोष्ठी एवं अनंक विद्वानों के स्वर्ण जयंती व्याख्यानमालाओं का सफल आयोजन किया गया। इसके अलावा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के दृष्टिगत स्वर्ण जयंती वर्ष में विविध प्रकार के अतिरिक्त कियाकलापों का भी सफल आयोजन किया गया, जिसमें विशेष रूप से पद्‌मश्री संतोष यादव द्वारा संचालित एवरेस्ट फाउडेंशन में 100 छात्रों को एडवेंचर टूर पर भेजा गया।

विश्वविद्यालय में उत्कृष्ट शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए विश्वविद्यालय की अधोसंरचना के साथ ही यहॉ के आचार्यों एवं अन्य कर्मचारियों ने अविश्रांत कार्य किया है, ताकि विश्वविद्यालय की छबि अंर्तराष्ट्रीय मानचित्र पर और भी सुदृढ़ हो सके। अपनी बौद्धिक प्रतिभा के बल पर इस विश्वविद्यालय के छात्रों ने नासा, इसरो, IIM, IIA, Bharat Petroleum, Indian Oil, ASI, CSMR, NPL इत्यादि संस्थाओं में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है।

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय की ख्याति इस बात से भी ज्ञात होती है कि इस विश्वविद्यालय की मानध पी–एच.डी उपाधि से कई ख्यातिलब्ध विद्वान सुशोभित हुए है। इनमें कुछ प्रमुख नाम श्री जयदेव बघेल (2003) श्री बी.एच. बृज किशोर, एन.सी.आर.आई, हैदराबाद (2003), श्री परदेशीलाल वर्मा (2003), पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह (2003), पद्म भूषण तीजन बाई (2006) प्रो. जे.एच. हेमिल्टन (2006), पद्म विभूषण डॉ. आर. चिदंबरम (2007), कृषि पं. श्री नारायण चावड़ा (2007), पद्मभूषण डॉ. टी. रामासामी (2012), प्रो. वेदप्रकाश, चेयरमेन यू.जी.सी. (2013) हैं।

## Approch

यह विश्वविद्यालय राजधानी में स्थित होने के कारण देश के अन्य महानगरों से रेलमार्ग, परिवहनमार्ग एवं हवाईमार्ग द्वारा सीधा जुड़ा है। दिल्ली, कलकत्ता, हैदराबाद, चिन्ई, नागपुर, भोपाल, इंदौर, भुवनेश्वर, पुणे इत्यादि के लिए यहॉ के स्वामी विवेकानंद एयरपोर्ट से नियमित विमान सेवा उपलब्ध है। रेल्वे स्टेशन से विश्वविद्यालय मात्र 5 कि.मी. एवं एयरपोर्ट मात्र 15 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। नगर से विश्वविद्यालय तक यातायात की सुविधा सदैव उपलब्ध रहती है। बाहर से अध्ययन हेतु आए विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय में 3 छात्रावास भी उपलब्ध है।

## NCNR

छत्तीसगढ़ में विपुल प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध है। इन संसाधनों के उपयोग हेतु उन्नत वैज्ञानिक तकनीकी, कुशल मानवीय संसाधन, व्यापक पूंजी एवं आवश्यक प्रौद्योगिकी और तंत्र की आवश्यकता है ताकि राज्य के समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों का राज्य की जनता के हित में दोहन कर निरंतर शोध द्वारा सशक्त एवं योग्य मानव संसाधन उपलब्ध हो सके, जो शैक्षिक, औद्योगिक एवं व्यवसायिक दक्षताओं में सक्षम एवं अग्रणी होगी।

विश्वविद्यालय एवं राज्य के लिए यह शुभ संकेत है कि भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने प्राकृतिक संसाधनों पर केंद्रित राष्ट्रीय शोध केन्द्र (National Centre for Natural Resources) की मंजूरी इस विश्वविद्यालय को दी है, जिससे यहॉ के छात्रों के लिए प्राकृतिक संसाधनों पर केंद्रित शोध एवं अनुसंधान के नए–नए आयाम खुलेंगे एवं रोजगार के अवसर भी प्राप्त होंगे।

# IQAC

विगत कुछ वर्षों में विश्व के सभी देशों में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता विषयक अभिरूचि जाग्रत हुई है। इसी परिपेक्ष्य में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यानन परिषद (NAAC) की स्थापना हुई। फरवरी 2011 में NAAC द्वारा विश्वविद्यालय को B ग्रेड प्रदान किया गया है तथा उनके सुझावों के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं आधारभूत संरचना विकसित करने तथा राष्ट्रीय परिदृश्य पर उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में उन्नयन के लिए आंतरिक गुणवत्ता सेल (IQAC : Internal Quality Assurance Cell) स्थापित किया गया है।

## अभियान (Vision)

विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही अपनी प्रगति के शिखर तक पहुॅचने हेतु यहॉ विधिवत अभियान प्रारंभ किया गया, जिसके कुछ प्रमुख बिन्दु हैं–

- विश्वविद्यालय को उच्च शिक्षा के राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय मानचित्र पर गुणवत्ता के उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में अधिष्ठापित करना।
- जीवन के मानवीय मूल्यों को आत्मसात करते हुए स्वालंबन की दिशा में कदम बढ़ाने हेतु छात्रों को शिक्षा देना एवं उन्हें आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करना।
- विश्वस्तरीय शिक्षा के मानदंडों को अपनाते हुए शिक्षण विभागों एवं महाविद्यालयों में छात्रों को शिक्षा प्रदान करना।
- राज्य के दूरस्थ अंचलों के छात्रों तक शिक्षा की ज्योति पहुॅचाने हेतु विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों में शिक्षा का ऐसा वातावरण निर्मित करना जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके।

अंधेरे से प्रकाश की, असत्य से सत्य की महान यात्रा में इस विश्वविद्यालय ने अपने लक्ष्य वाक्य '' अग्ने नय सुपथा राये'' के अनुरूप आचरण किया है। हम आगे बढ़ते रहेंगे, समूह के साथ और अकेले भी – आकाश की ऊंचाई तक। अज्ञानता के अंधकार को ज्ञान रूपी प्रकाश से आलोकित कर, संस्कृति की शुभ–संपदा से युक्त यह विश्वविद्यालय निरंतर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हो रहा है, नित–नए अनुसंधान और सत्य की खोज करते हुए, जन–हितकारी ज्ञान–विज्ञान का और सुसंस्कृति का प्रकाश सूर्य की भांति फैलाए और उत्कर्ष को प्राप्त करें, ऐसी हमारी आकांक्षा है और जनभावना है।

''कुलगीत''

प्रो. मिताश्री मित्रा
मानवविज्ञान अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)